सांध्य दैनिक 4PM

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्ष: 9 ● अंक: 211 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, बुधवार, 6 सितम्बर, 2023

मूल्य ₹ 3/-

कोको गॉफ अमेरिकी ओपन के... 7 | 24 का चुनाव है, मैदान में अभी... 3 | राष्ट्रीय पहचान भाजपा की निजी... 2

इंसान की डाइट का हर एक तत्व उसके शरीर पर असर डालता है और किसी न किसी तरह उसे चेंज करता है और इन्ही बदलावों पर उसका पूरा जीवन निर्भर करता है।

-हिप्पोक्रेटीस

4PM के यूट्यूब की एक और कामयाबी

सब्सक्राइबर हुए पंद्रह लाख, एक महीने में नौ करोड़ से ज्यादा व्यूज के साथ रचा इतिहास

» जुलाई में हासिल किया था दूसरा स्थान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। धीरे-धीरे जन-जन के बीच में लोकप्रिय होते जा रहे **4PM** चैनल ने फिर एकबार आसमान को छू लिया है। जनता तक सच को बेबाक तरीके से पहुंचाने वाले लोकप्रिय चैनल ने 15 लाख सब्सक्राइबर जोड़कर नया मील का पत्थर गढ़ा है। यहीं नहीं चैनल ने एक महीने के भीतर नौ करोड़ व्यू हासिल कर इतिहास रच दिया है। इससे पहले डेटा विंगस के जुलाई महीने के यूट्यूब के आँकड़े जारी किए थे जिसमें **4PM** को जुलाई माह में 72.3 मीलियन लगभग साढ़े सात करोड़ व्यू मिले थे। इसी के साथ वह देश भर में दूसरे स्थान पर पहुंचा था।

इस उपलब्धि से **4PM** के संपादक संजय शर्मा गदगद हैं। उनहोंने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि मेरे चैनल को लोग इतनी ऊंचाई पर पहुंचा देंगे। अपनी जिद सच की के स्लोगन को सत्य चरित्रार्थ करने में जुटे इस लोकप्रिय चैनल ने भारत के बड़े-बड़े यूट्यूब चैनल को जुलाई में पछाड़ दिया था। अपनी खबरों से सच दिखाने में अग्रणी **4PM** ने व्यू में 72.3 मीलियन के आंकड़े का छू लिया था। इस चैनल से केवल डीबी लाइव ही आगे था जिसके 100 मिलीयन से ज्यादा व्यू थे। सबसे लोकप्रिय पत्रकार रविश कुमार आठवें स्थान पर थे।

ससक्राइबर के साथ लगातार बढ़ रही लोकप्रियता

साा और देश की सच्चाई दिखाने वाला 4PM न्यूजचैनल आए दिन सफलता की नई बुलंदियों को छू रहा है। दिन पर दिन यूट्यूब की दुनिया में अपना एक अलग मुकाम स्थापित कर रहा है। ये सब संभव हो पा रहा है सिर्फ उसके सच दिखाने और आज के समय में साा से सवाल करने की काबिलियत की वजह से। 4PM वो सच्ची खबर दिखाता है जो आपको ये कथित मेन स्ट्रीम मीडिया के चैनल नहीं दिखाते। इसीलिए लोग इस चैनल को अधिक से अधिक देख रहे हैं और पसंद कर रहे हैं।

15 लाख सब्सक्राइबर

एक बार फिर आप सभी का हृदय से आभार!

15 लाख... कभी सोचा नहीं था कि आपका प्यार मेरी जिंदगी में इतनी जल्दी ये मुकाम ले आएगा, लगभग हर 10 दिन में एक लाख नए लोग मेरे परिवार से जुड़ जाते हैं, दुनिया भर से आ रहे मेल और प्यार भरे संदेश मेरे जीवन में एक नई ऊर्जा भर दे रहे हैं, एक महीने में अगर आपके चैनल पर नौ करोड़ से ज्यादा व्यूज आ जाएं तो ये चमत्कार से कम नहीं, ये सब आपके भरोसे के कारण संभव हुआ है, इसे बनाए रखिएगा, यही मेरी सबसे बड़ी पूँजी है. यक़ीन रखिएगा कोई भी ताकत, कोई भी डर मुझे सच बोलने से नहीं रोक सकता योंकि यही मेरी ताक़त है, एक बार फिर आप सभी का हृदय से आभार!

दबाव में कभी नहीं झुका 4PM

4PM ने यहां तक पहुंचने में काफी मेहनत की व कई मुश्किलों का सामना किया है। आए दिन साा से सवाल करना और देश के हुमरानों पर सवाल उठाना 4PM के लिए भी काफी मुश्किलों भरा रहा है। 4PM और संजय शर्मा की आवाज को दबाने का साा द्वारा कई बार प्रयास भी किया गया। लेकिन वो कहते हैं न कि सच को कभी भी दबाया नहीं जा सकता और सच की यही ताकत होती है कि जो भी सच को कहता है या बोलता है वो सफलता को हासिल कर ही लेता है। 4PM ने भी ये करके दिखाया है। 4PM और संपादक संजय शर्मा की आवाज को दबाने के लिए या कुछ नहीं किया गया। 4PM के ऑफिस पर पथराव किया गया। यहां तक की बम से उड़ाने का भी प्रयास किया गया। लेकिन संजय शर्मा नहीं डरे और 4PM को लेकर इसी तरह से साा से और साधीशों से सवाल करते रहे और अभी भी उनके साा से सवाल जारी हैं। कई बार 4PM के चैनल को भी सरकार द्वारा बंद कराया गया, ताकि वो इसके जरिए सच को दबा सकें और संजय शर्मा की आवाज को दबा सकें। लेकिन यहां भी सरकार को सिर्फ निराशा ही हाथ लगी।

धोखे से धर्मांतरण पर रोक लगाने की मांग वाली जनहित याचिका खारिज

» सुप्रीम कोर्ट ने कहा- अदालत सरकार को परमादेश की रिट कैसे जारी कर सकती

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को धोखे से धर्मांतरण कराए जाने पर रोक लगाने के लिए कदम उठाने की मांग वाली जनहित याचिका खारिज कर दी है। दरअसल, याचिका में मांग की गई थी कि केंद्र सरकार को आदेश दिया जाए कि वह इसके लिए आवश्यक कदम उठाए। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने कहा कि अदालत को इस मामले में क्यों प्रवेश करना चाहिए? अदालत सरकार को परमादेश की रिट कैसे जारी कर सकती है। बता दें, जनहित याचिका कर्नाटक के जेरोम एंटो ने दायर की थी। जेरोम एंटो की ओर से पेश वकील ने शीर्ष अदालत में कहा कि हिंदुओं और नाबालिगों को निशाना बनाया जा रहा है और उनका धोखे से धर्म परिवर्तन किया जा रहा है। पीठ ने कहा कि यह किस तरह की जनहित याचिका है? जनहित याचिका एक टूल यानी हथकंडा बनकर रह गई है और हर कोई इस तरह की याचिकाएं लेकर आ रहा है। याचिकाकर्ता के वकील ने पूछा कि इस तरह की शिकायत लेकर कहां जाना चाहिए। इस पर पीठ ने कहा कि हम सलाहकार क्षेत्राधिकार में नहीं हैं। अगर हाल ही में कोई ऐसा मामला आया है या किसी पर किसी पर मुकदमा चलाया गया है तो हम उस पर विचार कर सकते हैं। इसके बाद शीर्ष अदालत की पीठ ने जनहित याचिका को खारिज कर दिया।

जनहित याचिका कर्नाटक के जेरोम एंटो ने दायर की थी

एक देश-एक चुनाव, आज होगी समिति की पहली बैठक

» पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के घर जुटेंगे सदस्य

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। एक देश-एक चुनाव के लिए केंद्र सरकार की तरफ से गठित की गई कमेटी की आज पहली बैठक होगी। बताया गया है कि पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के घर पर ही उनकी अध्यक्षता में यह मीटिंग हो सकती है। समिति के सदस्य दोपहर बाद इस बैठक में हिस्सा लेने के लिए जुट सकते हैं। कानून मंत्रालय के मुताबिक, इस समिति का नेतृत्व पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद करेंगे।

समिति में गृहमंत्री अमित शाह, राज्यसभा में विपक्ष के पूर्व नेता गुलाम नबी आजाद, वित्त आयोग के पूर्व अध्यक्ष एनके सिंह, लोकसभा के पूर्व महासचिव सुभाष सी कश्यप, वरिष्ठ अधिवक्ता हरीश साल्वे और पूर्व मुख्य सतर्कता आयुक्त संजय कोठारी शामिल हैं। वहीं, कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी आमंत्रण के बावजूद इस समिति में शामिल होने से इनकार कर चुके हैं।

विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में भाग लेंगे मेघवाल

एक सरकारी अधिसूचना में कहा गया है कि कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में उच्च स्तरीय समिति की बैठकों में भाग लेंगे। समिति का गठन पांच राज्यों में विधानसभा चुनावों से कुछ महीने पहले और अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले किया गया है। संसदीय कार्य मंत्री प्रह्लाद जोशी ने शुक्रवार को समिति के गठन की जानकारी दी थी।

'राष्ट्रीय पहचान भाजपा की निजी प्रॉपर्टी नहीं'

» राघव चड्ढा बोले- केंद्र सरकार का यह फैसला देश विरोधी

4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी से राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा ने कहा कि केंद्र सरकार का यह फैसला देश विरोधी है। केंद्र सरकार ने इस मुद्दे को उठाकर एक बहस छेड़ दी है। लोगों की राष्ट्रीय पहचान भारतीय जनता पार्टी की निजी प्रॉपर्टी नहीं है। भाजपा ऐसा कैसे कर सकती है। आप के वरिष्ठ नेता ने कहा कि भाजपा ने हाल ही में प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया की जगह प्रेसिडेंट ऑफ भारत जी 20 समिट के निमंत्रण पत्र पर लिखा गया है। बीजेपी इंडिया को डाउन कैसे कर सकती है। देश किसी राजनीतिक पार्टी से संबंध नहीं रखता है। इसका संबंध 135 करोड़ की जनता से है।

जिसे वह अपनी इच्छानुसार बदल सके। इससे पहले कांग्रेस के राज्यसभा सांसद जयराम रमेश ने दावा किया कि राष्ट्रपति भवन ने 9 सितंबर को जी20 रात्रिभोज के लिए सामान्य भारत के राष्ट्रपति के बजाय भारत के राष्ट्रपति के नाम पर निमंत्रण भेजा है।

रमेश ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर इतिहास को विकृत करने और भारत को विभाजित करने का आरोप लगाया है। दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि कोई देश का नाम कैसे बदल सकता है। कल मान लो इस एलाइंस ने अपना नाम बदलकर भारत रख लिया तो क्या ये भारत नाम को भी बदल देंगे, फिर क्या भारत का नाम बीजेपी रखेंगे। ये क्या मजाक है, देश है भाई देश, इतने हजारों साल पुराना देश है।

भाजपा को 'इंडिया' से है घबराहट : बघेल

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भी इस मामले में वही सवाल किया है जो केजरीवाल ने पूछा है। बघेल ने कहा हमें राष्ट्रपति से निमंत्रण पत्र मिला है। अब तक हमें प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया से निमंत्रण पत्र मिलता था लेकिन इस बार प्रेसिडेंट ऑफ भारत से निमंत्रण पत्र आया है। भारत के साथ इतनी दिक्कत? अब विपक्षी गठबंधन का नाम इंडिया है इसलिए भाजपा इसे नजरअंदाज कर रही है। कल अगर गठबंधन का नाम बदलकर भारत हो गया को क्या भाजपा उसे भी बदल देगी। वहीं कांग्रेस पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने भी इंडिया और भारत पर संविधान का हवाला दे दिया। उन्होंने संविधान के अनुच्छेद 1 में वर्णित भारत के राज्यों का संघ होने का जिक्र किया है। इसके बाद सोशल मीडिया पर आर्टिकल 1 ट्रेंड करने लगा। लोग चर्चा कर रहे हैं कि आखिर संविधान के अनुच्छेद में इंडिया और भारत के बारे में क्या कहा गया है। दरअसल, राहुल गांधी ने आर्टिकल 1 में लिखा एक वाक्य ट्वीट किया है। उन्होंने लिखा, इंडिया यानी भारत, राज्यों का एक संघ है।

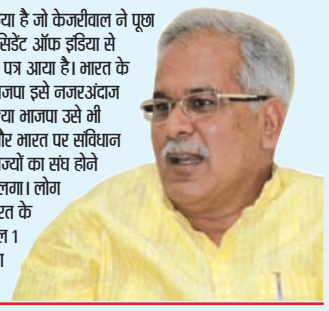

इंडिया अंग्रेजों का दिया शब्द, इसे बाहर करना होगा : विजयवर्गीय

कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि इंडिया शब्द अंग्रेजों के साथ आया है। अंग्रेजों के जाने के साथ इसे भी चले जाना चाहिए। इंडिया नहीं भारत की मांग हर तरफ से उठ रही है। सरकार इस पर विचार कर रही है। संयुक्त विपक्ष इंडिया का उद्देश्य सनातन का विरोध है। जिन्होंने सनातन विरोधी बयान दिया उनका कांग्रेस के नेता भी समर्थन कर रहे हैं। यह दोहरा चरित्र है। अब उनके नेता हरि कथा जैसे आयोजन करा रहे हैं, लेकिन नकल से अक्ल नहीं आती। सुंदर भेष बनाकर तो सूर्पनखा भी गई थी, जिसकी नाक काटी थी।

आरएसएस और भाजपा के मन में कुंठा : संजय सिंह

आप नेता एवं राज्यसभा सांसद संजय सिंह और आप की मुख्य प्रवक्ता प्रियंका कक्कड ने कहा कि मोदी सरकार संविधान से इंडिया शब्द को हटाना चाहती है। इसकी शुरुआत आरएसएस के प्रमुख मोहन भागवत ने की। इंडिया शब्द को हटाकर अब सिर्फ भारत शब्द का इस्तेमाल करेंगे। उन्होंने कहा कि भाजपा और आरएसएस ने हमेशा नफरत फैलाने का काम किया है, लेकिन बाबा साहेब ने वंचित समाज से उठकर देश का संविधान लिखा। इस बात की कुंठा आरएसएस और भाजपा के मन में है। वहीं केजरीवाल ने आरोप लगाया कि सरकार ने विपक्षी गठबंधन इंडिया से डरकर नाम में यह बदलाव किया है। केजरीवाल ने कहा कि देश 140 करोड़ लोगों का है किसी एक पार्टी का थोड़ी है। देश का नाम बदल दो। ये देश के साथ गद्दारी है।

कांग्रेसियों को एक परिवार के गुणगान से मतलब : नड्डा

» भारत माता की जय नारा रोकने पर कांग्रेस नेता आराधना को बीजेपी ने घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। कांग्रेस नेता और राजस्थान पर्यवेक्षक आराधना मिश्रा भारत माता की जय के नारे सुनकर भड़क गईं। उन्होंने कार्यकार्ताओं को कड़ी फटकार लगाई। साथ ही कहा कि कांग्रेस जिंदाबाद के अलावा भारत माता की जय का नारा लगाया तो ये अनुशासनहीनता होगी। अब इस पूरी घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। जिसे भाजपा नेताओं ने शेयर पर कांग्रेस पर हमला बोला है।

भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने भी इसे लेकर अपनी प्रतिक्रिया दी है। नड्डा ने एक्स (ट्वीट) कर कहा कि कांग्रेस को भारत माता और संविधान से कोई मतलब नहीं है। वह केवल एक ही परिवार के गुणगान में लगी है। दरअसल, सोमवार को जयपुर में आदर्श नगर और हवा महल विधानसभा की वन टू वन बैठक में हंगामा हो गया था। इस दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने भारत माता की जय के नारे लगाना शुरू कर दिए। इसके बाद वहां मौजूद कांग्रेस पर्यवेक्षक आराधना मिश्रा भड़क गईं।

भारत के पक्ष में थे मुलायम सिंह यादव

» सीएम रहते संविधान संशोधन के लिए लाए थे प्रस्ताव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा संस्थापक मुलायम सिंह यादव भी इंडिया के मुकाबले भारत के हिमायती थे। इसके लिए मुख्यमंत्री रहते हुए वह संविधान संशोधन के लिए प्रस्ताव भी लाए थे, जिसे विधानसभा में वर्ष 2004 में सर्वसम्मति से पास कर केंद्र को भेजा गया था। 3 अगस्त 2004 को विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष लालजी टंडन ने संस्कृत शिक्षकों का मुद्दा उठाते हुए कहा था कि इन शिक्षकों को उनका जायज हक मिलना चाहिए। जिस दिन दुनिया से संस्कृत खत्म हो जाएगी, उस दिन संस्कृति भी खत्म हो जाएगी।

इस पर तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने कहा कि वर्तमान सरकार में कभी भी संस्कृत की उपेक्षा नहीं होगी। उन्होंने पूर्ववर्ती भाजपा सरकार पर अंग्रेजी का अधिक प्रयोग किए जाने का आरोप लगाया।

यूपी विस में लालजी टंडन ने भी किया था समर्थन

मुलायम सिंह ने हिंदी के प्रयोग पर बल देते हुए कहा कि संसदीय कार्यमंत्री सदन में प्रस्ताव लाएं और उसे पारित करके केंद्र सरकार को भेज दिया जाए कि जहां संविधान में इंडिया इज भारत लिखा है, वहां भारत इज इंडिया लिख दिया जाए। इस पर लालजी टंडन ने सुझाव दिया कि संविधान में संशोधन का प्रस्ताव है, इसे विधिवत लाया जाना चाहिए। इसके बाद तत्कालीन सीएम की ओर से रखे गए प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया। ये प्रस्ताव था-यह सदन केंद्र सरकार से संस्तुति करता है कि संविधान के भाग-1 के अनुच्छेद-1 (नेम एंड टेरीटरी ऑफ यूनियन) में इंडिया दैट इज भारत के स्थान पर भारत दैट इज इंडिया रखने हेतु संविधान में आवश्यक संशोधन करें।

इंडिया नाम पर विवाद सत्ता पक्ष व विपक्ष की मिलीभगत : मायावती

लखनऊ। बसपा सुप्रीमो मायावती ने बुधवार को मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि देश के नाम इंडिया पर विवाद सत्ता पक्ष और विपक्ष की मिलीभगत है। वह मीडिया को संबोधित कर रही थीं। बता दें कि केंद्र सरकार ने देश के नाम इंडिया की जगह भारत को प्रचलन में लाने की शुरुआत कर दी है। इसे लोकसभा चुनाव 2024 के लिए विपक्षी गठबंधन के नाम इंडिया से भी जोड़कर देखा जा रहा है। कांग्रेस का कहना है कि मोदी सरकार विपक्षी गठबंधन से इतना डर गई है कि अब देश का ही नाम बदल देना चाहती है। जबकि संविधान के पहले ही अनुच्छेद में लिखा है कि इंडिया दैट इज भारत...।

घोसी चुनाव में जीत के अपने-अपने दावे

» सपा और भाजपा के बीच कांटे का मुकाबला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। घोसी विधानसभा उप चुनाव के लिए मंगलवार को हुए मतदान में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) बनाम इंडिया के बीच कांटे का मुकाबला हुआ है। हालांकि भाजपा और समाजवादी पार्टी के तमाम प्रयास के बावजूद मतदान 51 प्रतिशत तक ही पहुंचा। भाजपा के समर्थित माने जाने वाले नोनिया चौहान, राजभर, निषाद और कुर्मी मतदाताओं ने भी मतदान में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

वहीं सपा के परंपरागत वोट बैंक मुस्लिम और यादव समाज के साथ सपा प्रत्याशी सुधाकर सिंह के के सजातीय ठाकुर मतदाताओं ने भी पूरे जोश से मतदान कर मुकाबले को न केवल रोचक बल्कि कांटे का बनाया। बरहाल यह माना जा रहा है कि जो भी दल दलित मतदाताओं में सेंध लगाने में जितना सफल रहेगा बाजी उसके के हाथ लगेगी। उप चुनाव को लेकर विपक्ष की ओर से आशंका जताई जा रही थी कि उनसे जुड़े मुस्लिम और यादव मतदाताओं को मतदान नहीं करने दिया जाएगा। भाजपा प्रत्याशी दारा सिंह चौहान के सजातीय नोनिया चौहान मतदाताओं के साथ राजभर और निषाद समाज के मतदाताओं ने भी पूरे जोश से मतदान किया। इन जातियों से जुड़ी बस्तियों के मतदान बूथों पर भी लंबी लंबी कतारें देखने को मिली। जातीय समीकरण के लिहाज से उप चुनाव में पूरा दारोमदार राजभर, नोनिया चौहान और निषाद समाज के मतदाताओं पर है। उप चुनाव में दलित मतदाताओं ने भी मतदान में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया है। दोनों ही दलों की ओर से दलितों का मतदान प्रतिशत बढ़ाने पर जोर दिया गया। दलितों में खटीक और धोबी समाज का रुझान भाजपा की ओर दिखा। लेकिन दलित वर्ग में जाटव मतदाता सबसे अधिक हैं। जाटव मतदाताओं का दोनों ही दलों की ओर रुझान दिखा।

51 फीसद पड़े वोट

विपक्ष ने लगाया सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग का आरोप

विपक्ष की ओर से सत्तापक्ष पर सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग कर उनके मतदाताओं को भयभीत करने का आरोप भी लगाया गया। लेकिन मंगलवार को हुए मतदान में मुस्लिम, यादव और ठाकुर बहुल इलाकों में मतदान केंद्रों पर भारी भीड़ देखने को मिली। शुरुआती दौर में पहचान पत्र और आधार कार्ड के नाम पर मतदाताओं को परेशान करने की शिकायत मिली। लेकिन उसके बाद मतदान सामान्य व्यवस्था के तहत चलता रहा। हालांकि मुस्लिम बहुल इलाकों में मतदान प्रतिशत थोड़ा कम रहा है। सपा के वोट बैंक से जुड़ी अन्य जातियों ने जमकर मतदान किया। आजमगढ़ और रामपुर लोकसभा उप चुनाव या रामपुर विधानसभा उप चुनाव जैसी स्थिति नहीं रहने से सपा मुकाबले में मजबूती से बनी रही।

24 का चुनाव है, मैदान में अभी और दांव हैं

» जी20 सम्मेलन के निमंत्रण पत्र पर प्रेसिडेंट आफ भारत पर रार

» भाजपा व मोदी सरकार पर पूरे विपक्ष का हमला

गीताश्री

नई दिल्ली। जी-20 सम्मेलन के रात्रिभोज कार्यक्रम के निमंत्रण पत्र में प्रेसिडेंट ऑफ भारत लिखने पर राजनीति शुरू हो गई है। विपक्षी पार्टियां इसे लेकर सरकार पर निशाना साध रही हैं। मोदी सरकार द्वारा पत्र में प्रेसिडेंट आफ इंडिया सही है या गलत ये तो आने वाले दिनों में पता चलेगा। पर इसमें कोई शक नहीं भाजपा पूरी तरह से 2024 चुनाव की तैयारी में जुट गई है। पहले यूसीसी फिर वन नेशन वन इलेक्शन और अब इस पत्र में भारत का इस्तेमाल करके भाजपा ने विपक्ष इंडिया को घेरने का प्रयायस किया है। आगे आने वाले समय में यह मुद्दा और गरमाएगा। दरअसल कांग्रेस ने मंगलवार (5 सितंबर) को आरोप लगाया कि राज्यों के संघ पर मोदी सरकार हमला कर रही है, जिस इनविटेशन को लेकर बवाल मचा है, वो जी20 सम्मेलन के डिनर का कार्यक्रम है, जिसमें अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन समेत दुनिया भर के राष्ट्रपति और कई राष्ट्राध्यक्ष हिस्सा लेने वाले हैं, इस डिनर के इनविटेशन में प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया की जगह प्रेसिडेंट ऑफ भारत लिखा गया है।

वहीं संविधान के अनुच्छेद में हू-ब-हू वर्णित है। लेकिन बात इसकी व्याख्या की है। सवाल है कि क्या दोनों कांग्रेस नेता आर्टिकल 1 को जिस रूप में पेश कर रहे हैं, वो सही है? राहुल गांधी संसद में भी कह चुके हैं कि भारत एक राष्ट्र नहीं, राज्यों का एक संघ है। इस बयान पर भी जमकर बवाल मचा था और गंभीर चर्चा भी हुई थी। तब सत्ताधारी बीजेपी ने राहुल गांधी पर क्षेत्रीय भावनाएं भड़काकर देश को कमजोर करने और अलगाववाद को बढ़ावा देने का आरोप लगाया था। सवाल तो बनता ही है कि कांग्रेस नेता बार-बार भारत के राज्यों का संघ होने पर जोर क्यों देते हैं? क्या वो यह कहना चाहते हैं कि हर राज्य स्वतंत्र है और भारत महज उनकी छतरी है, ठीक यूरोपियन यूनियन की तरह?

इसमें नया क्या है सभी जानते है इंडिया मतलब भारत : ममता

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने इस पर कहा कि उन्होंने (केंद्र सरकार) इंडिया का नाम बदल दिया है। जी20 के रात्रिभोज के निमंत्रण पत्र में इंग्लिश में भारत लिखा गया है। हम इंडिया और इंडियन कॉन्स्टिट्यूशन कहते हैं। वहीं हिंदी में हम भारत का संविधान कहते हैं। हम सभी भारत कहते हैं और इसमें नया क्या है? लेकिन इंडिया नाम दुनियाभर में जाना जाता है,अब अचानक से क्या हो गया कि उन्हें देश का नाम बदलने की जरूरत पड़ गई? बंगाल सीएम ने कहा कि हम सभी जानते हैं कि इंडिया, भारत है लेकिन दुनिया हमें इंडिया के तौर पर जानती है।

सरकार इतनी बेवकूफ नहीं की पूरी तरह से नाम बदल दे : थरूर

कांग्रेस ने भी सरकार के इस कदम की आलोचना की है। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने दावा किया है कि जी20 के रात्रिभोज के लिए भेजे गए निमंत्रण पत्र में आमतौर पर इस्तेमाल होने वाले प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया को बदला गया है और उसकी जगह प्रेसिडेंट ऑफ भारत शब्द का इस्तेमाल किया गया है। जयराम रमेश ने कहा कि जो इंडिया था, वह राज्यों का संघ था लेकिन अब तो राज्यों के संघ पर भी हमला किया जा रहा है। थरूर ने कहा कि सरकार इतनी बेवकूफ नहीं होगी जो इंडिया नाम को पूरी तरह से हटा दे, जिसकी सदियों में एक ब्रांड वैल्यू बनी है।

नाम बदलने का अधिकार किसी को नहीं : शरद पवार

जी20 के डिनर में राष्ट्रपति को प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया की जगह प्रेसिडेंट ऑफ भारत लिखे जाने पर मचे बवाल के बीच अब शरद पवार ने इस मामले पर कहा कि किसी को भी देश का नाम बदलने का अधिकार नहीं है। शरद पवार ने कहा है कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की बुधवार (6 सितंबर) को बुलाई गई बैठक में उन सभी पार्टियों के प्रमुखों के साथ इस मुद्दे पर बातचीत होगी, जो इंडिया गठबंधन का हिस्सा हैं। 2024 के चुनाव में एनडीए के मुकाबले के लिए बने इस गठबंधन में 28 पार्टियां शामिल हैं, शरद पवार ने कहा, मुझे समझ नहीं आता कि सत्तारूढ़ दल देश से जुड़े एक नाम को लेकर क्यों परेशान है। एनसीपी चीफ ने ये बात उस वक्त कही।

क्या कहता है आर्टिकल 1

अनुच्छेद 1 में भारत और इंडिया को लेकर क्या कहा गया है। आर्टिकल 1 का शीर्षक संघ और उसका राज्य क्षेत्र है। इसमें कहा गया है...1. संघ का नाम और राज्य क्षेत्र (1) भारत, अर्थात् इंडिया, राज्यों का संघ होगा। (2) राज्य और उनके राज्य क्षेत्र वे होंगे जो पहली अनुसूची में विनिर्दिष्ट है।(3) भारत के राज्यक्षेत्र में,-(क) राज्यों के राज्यक्षेत्र,(ख) पहली अनुसूची में विनिर्दिष्ट संघ राज्यक्षेत्र, और(ग) ऐसे अन्य राज्यक्षेत्र जो अर्जित किए जाएं,समाविष्ट होंगे।

भारत राज्यों का संघ : राहुल गांधी

कांग्रेस पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने भी इंडिया और भारत पर संविधान का हवाला दे दिया। उन्होंने संविधान के अनुच्छेद 1 में वर्णित भारत के राज्यों का संघ होने का जिक्र किया है। इसके बाद सोशल मीडिया पर आर्टिकल 1 ट्रेंड करने लगा। लोग चर्चा कर रहे हैं कि आखिर संविधान के अनुच्छेद में इंडिया और भारत के बारे में क्या कहा गया है। दरअसल, राहुल गांधी ने आर्टिकल 1 में लिखा एक वाक्य ट्वीट किया है। उन्होंने लिखा, इंडिया यानी भारत, राज्यों का एक संघ है।% इसी आधार पर उन्होंने एक देश एक चुनाव के विचार का भी खंडन किया। उन्होंने लिखा, एक देश एक चुनाव का विचार भारतीय संघ और इसके सभी राज्यों पर हमला है।वहीं, जयराम रमेश ने राष्ट्रपति की तरफ से भेजी जा रही चिट्ठी पर कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी) देश को बांटने के लिए इतिहास को तोड़-मरोड़कर पेश कर रहे हैं।

ये देश के साथ गद्दारी : केजरीवाल

दिल्ली सीएम अरविंद केजरीवाल ने भी जी20 के रात्रिभोज निमंत्रण कार्यक्रम में इंडिया की जगह भारत नाम का इस्तेमाल करने पर केंद्र सरकार को आड़े हाथों लिया। केजरीवाल ने आरोप लगाया कि सरकार ने विपक्षी गठबंधन इंडिया से डरकर नाम में यह बदलाव किया है। केजरीवाल ने कहा कि देश 140 करोड़ लोगों का है किसी एक पार्टी का थोड़ी है। कल को अगर विपक्षी गठबंधन ने अपना नाम भारत रख लिया तो क्या भारत का नाम बीजेपी रखेंगे। ये क्या मजाक है, ये देश है। इतने हजारों साल पुराना देश है। भाजपा को लग रहा है कि नाम रखने से इनके वोट कम हो जाएंगे तो देश का नाम बदल दो। ये देश के साथ गद्दारी है।

राजा भरत के नाम पर पड़ा भारत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

वैदिक सभ्यता (1500 ईसापूर्व, 600 ईसापूर्व) भारत को एक सनातन राष्ट्र माना जाता है क्योंकि यह मानव सभ्यता का पहला राष्ट्र था। श्रीमद्भागवत के पंचम स्कन्ध में भारत राष्ट्र की स्थापना का वर्णन आता है। भारतीय दर्शन के अनुसार सृष्टि उत्पत्ति के पश्चात ब्रह्मा के मानस पुत्र स्वयंभु मनु ने व्यवस्था सम्भाली। भारत शब्द से भारतीय उपमहाद्वीप, भारत गणतंत्र, या वृहत्तर भारत आदि का आशय लिया जाता है। भारत के अंग्रेजी नाम इण्डिया (इंडिया) की उत्पत्ति सिंधु शब्द से हुई है जो यूनानियों द्वारा चौथी सदी ईसा पूर्व से प्रचलन में है। इंडिया नाम पुरानी अंग्रेजी में 9वीं सदी में और आधुनिक अंग्रेजी में 17वीं सदी से मिलता है। जब अंग्रेज भारत में आए उस समय हमारे देश को हिन्दुस्तान कहा जाता था, हालांकि, ये शब्द बोलने में उन्हें परेशानी होती थी, ब्रिटिश सरकार को पता लगा कि भारत की सभ्यता सिंधु घाटी है जिसे इंडस वैली भी कहा जाता है। इस शब्द को लैटिन भाषा में इंडिया भी कहते हैं, तो उन्होंने भारत को इंडिया कहना शुरू कर दिया।

इंडिया अर्थात् भारत राज्यों का संघ होगा

लेकिन भारत या भारतवर्ष नाम का समर्थन करने वाले ये सारे नेता उत्तर भारत या कहें कि हिंदी पट्टी के थे, जबकि भारत का विस्तार उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक है, संविधान सभा में हर क्षेत्र, हर भाषा के लोग बैठे थे, हिंदी को राजभाषा मानने पर पहले ही बहुत घमासान हो चुका था, ऐसे में विदेशों से संबंधों का हवाला और देश में सबको एक सूत्र में जोड़ने की कोशिश करते हुए संविधान के अनुच्छेद एक में लिखा गया कि इंडिया अर्थात् भारत राज्यों का संघ होगा।

इंडस से बना इंडिया

हमारे देश के बदलते नाम का एक इतिहास है। कहते हैं कि महाराज भरत ने भारत का संपूर्ण विस्तार किया था और उनके नाम पर ही इस देश का नाम भारत पड़ा। मध्य काल में जब तुर्क और ईरानी यहां आए तो उन्होंने सिंधु घाटी से प्रवेश किया, वो स का उच्चारण ह करते थे और इस तरह से सिंधु का अपभ्रंश हिंदू हो गया, उन्होंने यहां के निवासियों को हिंदू कहा और हिंदुओं के देश को हिंदुस्तान का नाम मिला। सिंधु नदी का दूसरा नाम इंडस भी था, इस नदी के किनारे विकसित सभ्यता इंडस वैली सिविलाइजेशन कहलाई। सिंधु नदी का इंडस नाम भारत आए विदेशियों ने रखा। सिंधु सभ्यता के कारण भारत का पुराना नाम सिंधु भी था, जिसे यूनानी में इंडो या इंडस भी कहा जाता था। जब ये शब्द लैटिन भाषा में पहुंचा तो बदलकर इंडिया हो गया।

नाम को लेकर संविधान सभा में हुई थी चर्चा

14-15 अगस्त 1947 की आधी रात को जब भारत अपने भाग्य से मुलाकात कर रहा था, तो वो घड़ी हिंदुस्तान के लिए सदियों के संघर्ष और तपस्या का पुण्य फल भी थी। सदियों के बाद मिली आजादी के बाद नया भारत कैसे चलेगा, इसके क्या कायदे-कानून होंगे इसे लेकर एक संविधान भी बनाया जा रहा था। संविधान सभा में देश के नाम पर सवाल उठा कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र बनने की दिशा में बढ़ा ये देश अपना नाम क्या रखेगा, इस दौरान भारत, हिंदुस्तान, हिंद और इंडिया जैसे विकल्पों पर खूब माथापच्ची हुई। 17 सितंबर 1949 को संघ के नाम और राज्यों पर चर्चा शुरु हुई। संविधान की ड्राफ्टिंग कमेटी के अध्यक्ष डॉक्टर भीमराव अंबेडकर चाहते थे कि इसको आधे घंटे में स्वीकार कर लिया जाए, लेकिन दूसरे सदस्यों में नाम को लेकर असहमति थी जो चाहते थे कि इंडिया और भारत जैसे शब्दों के रिश्तों को समझ लिया जाए। इस बहस में सेठ गोविंद दास, कमलापति त्रिपाठी, श्रीराम सहाय, हरगोविंद पंत और हरि विष्णु कामथ जैसे नेताओं ने हिस्सा लिया। हरि विष्णु कामथ ने सुझाव दिया कि इंडिया अर्थात् भारत को भारत या फिर इंडिया में बदल दिया जाए। लेकिन उनके बाद सेठ गोविंद दास ने भारत के ऐतिहासिक संदर्भ का हवाला देकर देश का नाम सिर्फ भारत रखने पर बल दिया। इस पर बीच का रास्ता कमलापति त्रिपाठी ने निकाला, उन्होंने कहा कि इसका नाम इंडिया अर्थात् भारत की जगह भारत अर्थात् इंडिया रख दिया जाए। हरगोविंद पंत ने अपनी राय रखते हुए कहा कि इसका नाम भारतवर्ष होना चाहिए, कुछ और नहीं।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

भारत की विविधता पर न हो हमला

भारत में आजकल वन नेशन वन इलेक्शन को लेकर चर्चा छिड़ी हुई है। सरकार इस पर विशेष सत्र ला रही है। हालांकि इस मुद्दे को लेकर राय बंटी हुई है। आगे आने वाले समय में पता चलेगा कि इसपर देश के लोग क्या सोचते हैं। पर इस पर जहां सत्ता पक्ष अपनी दलीलें रख रहा है वहीं विपक्ष इसके विरोध में अपनी बातें रख रहा है। भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था विविधता लिए हुए है। भौगोलिक, सांस्कृतिक और सामाजिक रूप में यह दिखाई भी पड़ती है। विभिन्न भाषाई पहचान से लैस भारतीय समाज में कई रूप-रंग है। यहाँ की संस्कृति प्रांतवार विभिन्नता लिए है। इसे समझते हुए स्वतंत्रता आंदोलन संघर्ष उपरांत राष्ट्र निर्माण के लिए संविधान समिति में सहमति/असहमति के विचारों को समुचित प्रतिनिधित्व दिया गया। जिससे भारत की अनेकता में एकता की भावना आकार ले सके। संविधान सभा द्वारा निर्मित संविधान में लोकतान्त्रिक व्यवस्था संचालन हेतु प्रत्येक पांच वर्ष केंद्र और राज्य में चुनाव की व्यवस्था की गई है।

संविधान में संघ का नाम भारत अर्थात इंडिया को राज्यों का संघ कहा गया है। इसका ढांचा संघीय है। इसके साथ ही केंद्र और राज्य की व्यवस्था के पृथक्करण हेतु सातवीं अनुसूची में संघ सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची का प्रावधान किया गया है। जिससे केंद्र और राज्य के बीच प्रशासनिक शक्तियों एवं सीमाओं के बीच टकराहट से बचा जा सके। भारतीय संवैधानिक व्यवस्था में महामहिम राष्ट्रपति को प्रथम व्यक्ति के रूप में स्थान प्राप्त है। जिसका निर्वाचन आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा होता है। जबकि प्रधानमंत्री संसद के मंत्रिमंडल का नेता होता है जिसका निर्वाचन परंपरागत मतदान प्रणाली से होता है। राज्यों में यह व्यवस्था महामहिम राज्यपाल और मुख्यमंत्री के रूप में दिखाई देती है। केंद्र और राज्य के चुनाव जहां निर्वाचन आयोग करवाता है वहीं राज्यों में निकाय चुनाव और पंचायत चुनाव को राज्य निर्वाचन आयोग ही करवाता है। यह विश्लेषण इस निष्कर्ष पर पहुंचाता है कि भारत में चुनाव का स्वरूप एकरूप नहीं है। स्वतंत्र भारत की संवैधानिक व्यवस्था में विविधता प्रभावी तत्व है। राष्ट्रीय स्तर पर देश के अमूमन सभी प्रांतों का प्रतिनिधित्व देखने को मिलता है। राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री सहित अन्य महत्वपूर्ण संवैधानिक पदों की विविधता भारत को एक राष्ट्र के रूप में बांधे रहती है।

> *इसे समझते हुए स्वतंत्रता आंदोलन संघर्ष उपरांत राष्ट्र निर्माण के लिए संविधान समिति में सहमति/असहमति के विचारों को समुचित प्रतिनिधित्व दिया गया। जिससे भारत की अनेकता में एकता की भावना आकार ले सके। संविधान सभा द्वारा निर्मित संविधान में लोकतान्त्रिक व्यवस्था संचालन हेतु प्रत्येक पांच वर्ष केंद्र और राज्य में चुनाव की व्यवस्था की गई है। संविधान में संघ का नाम भारत अर्थात इंडिया को राज्यों का संघ कहा गया है। इसका ढांचा संघीय है।*

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

समावेशी लोकतंत्र के विचार को संबल

डॉ. भारत

विश्व में लोकतंत्र की जननी के रूप में जाना जाने वाला भारत राष्ट्र न केवल सबसे पुराना लोकतंत्र है बल्कि एक परिपक्व लोकतंत्र भी है। भारत में लोकतंत्र की जड़ें चौथी शताब्दी से ही देखी जा सकती हैं। तंजावुर के पत्थर के शिलालेख इसका जीवंत प्रमाण हैं। कालिंगा और लिच्छवि काल के दौरान मौजूद सामाजिक व्यवस्थाओं के साक्ष्य भी भारत के लोकतांत्रिक इतिहास के बारे में बहुत कुछ बताते हैं।

भारत में 'एक राष्ट्र-एक चुनाव' का विचार चुनाव-चक्र को इस तरह से संरचित करने का है कि लोकसभा, राज्य विधानसभाओं, नगरपालिकाओं और पंचायतों के चुनाव 'समकालिक' व 'समक्रमिक' हों जिससे चुनी हुई सरकारें एक साथ बैठें और देश को साधनों-संसाधनों और धनशक्ति-श्रमशक्ति के लिए अल्पकालिक और दीर्घकालिक परिणाम प्राप्त करने हेतु दूरदर्शितापूर्ण योजना को व्यवस्थित रूप से लागू करने के लिए सकारात्मक विचार करें।

वर्ष 1947 में आजादी के बाद 1952, 1957, 1962 और 1967 में लोकसभा और विधानसभा के चुनाव एक साथ हुए थे। इसके बाद कुछ राज्यों की विधानसभाएं पहले भंग होने के चलते यह व्यवस्था टूटती चली गई। ध्यानाकर्षण बात यह है कि वर्तमान 'एक राष्ट्र-एक चुनाव' का प्रस्ताव लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के साथ ही नगरपालिकाओं व पंचायतों के चुनाव कराए जाने की बात का अंगीकृत करने का उल्लेख कर रहा है। इस परिदृश्य मे यहां यह उल्लेखनीय है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जर्मनी, हंगरी, दक्षिण अफ्रीका, इंडोनेशिया, स्पेन, स्लोवेनिया, अल्बानिया, पोलैंड, बेल्जियम और स्वीडन जैसे देशों में आज भी एक ही बार चुनाव कराने की परंपरा है।

वर्तमान में, जब भी सरकार का कार्यकाल समाप्त होता है या जब भी विभिन्न कारणों से सदन भंग होता है तो चुनाव का बोझ राजकोष पर पड़ता है। हर साल देश में औसतन 4 से 6 विधानसभा चुनाव होते हैं जिससे प्रशासनिक, नीतिगत मामले प्रभावित होते हैं। अगणनीय वित्तीय लागत के चलते लगातार चुनाव करना 'सफेद हाथी' को पालने जैसा शौक साबित हो गया है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक चुनाव के दौरान सरकारी-तंत्र चुनावी प्रक्रिया और संबंधित कार्यों के कारण अपने नियमित कर्तव्यों से चूक जाता है। चुनावी बजट में इन लाखों मानव-घंटे की लागत की गणना की ही नहीं जाती। चुनावों के चलते 'आदर्श आचार संहिता' सरकार की कार्यप्रणाली को भी बुरी तरह से प्रभावित करती है, क्योंकि चुनावों की

घोषणा के बाद न तो किसी नई महत्वपूर्ण नीति की घोषणा की जा सकती है और न ही क्रियान्वयन। इससे हर कुछ महीनों बाद, विकास कार्य बाधित होते हैं। प्रशासनिक लागत पर एक नजर डालें तो सीमा-सुरक्षा को खतरे में डाल संवेदनशील क्षेत्रों से सुरक्षा बलों को हटाने और चुनावों में बार-बार तैनाती के कारण शंका व आशंका से भरी अदृश्य लागत का भुगतान किया जाता है। सवाल है कि मतदाताओं को बार-बार चुनाव चाहिए या विकासात्मक दृष्टिकोण? लगातार चुनाव राजनीतिक स्थिरता कैसे प्रदान कर सकते हैं? सरकारें क्रियात्मक दृष्टि से आगे बढ़ें या हमेशा चुनावी शंखनाद के बिगुल में उलझी रहें? जब चुनावी प्रक्रिया में कोई बदलाव ही नहीं हो रहा तो संघीय-ढांचे पर प्रभाव कैसे पड़ेगा? एक साथ चुनाव की अवधारणा लोकतंत्र और संघवाद के मूल सिद्धांतों पर चोट कहां और कैसे है? प्रश्न उठता है कि लगातार चुनाव के माध्यम से 'आदर्श आचार संहिता' होनी चहिए या एक राष्ट्र-एक चुनाव के जरिये 'आदर्श लोकतांत्रिक विचार'? समय-समय पर 'एक राष्ट्र-एक चुनाव' के मसले पर चुनाव-आयोग, नीति-आयोग, विधि-आयोग, संसदीय स्थायी समिति और संविधान समीक्षा आयोग गहन चिंतन कर चुके हैं। सर्वविदित कानूनी प्रक्रिया के अनुसार भारतीय चुनाव आयोग पंजीकरण तो राजनीतिक दलों का करता है लेकिन राजनीतिक दलों के लिए कोई अधिकतम चुनाव व्यय सीमा निर्धारित नहीं है। भारत में चुनावी कानून, सिर्फ चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों के लिए ही अधिकतम चुनाव व्यय सीमा प्रदान करता है। वजह है कि तमाम राजनीतिक दल देश के किसी न किसी हिस्से में लगातार होने वाले चुनाव लड़ रहे होते हैं और इस प्रकार उनके द्वारा किए जाने वाले चुनावी खर्च पर सीमा निर्धारित करना न केवल मुश्किल है बल्कि असंभव भी। कहने की जरूरत नहीं है कि 'एक राष्ट्र-एक चुनाव' की अवधारणा से चुनावों में चल रहे काले धन के इस्तेमाल और भ्रष्टाचार पर काफी हद तक अंकुश लाएगा। एक भारत की परिकल्पना के चलते जब माल एवं सेवा कर 1 जुलाई, 2017 से सभी राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में 'एक राष्ट्र-एक कर' के सिद्धांत के रूप में प्रणालीबद्ध व सफ़लतापूर्वक स्थापित हो गया है तो चुनावी सुधार और जीर्णोद्धार के लिए इस प्रस्ताव से परहेज़ क्यों? बार-बार होने वाले चुनाव राजनीतिक दलों और राजनेताओं को सामाजिक ताने-बाने को तोड़ने व सामाजिक समरसता को भंग करने का मौका देते हैं जिसके कारण अनावश्यक तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। एक चुनाव की सोच में सामाजिक समरसता का भाव टपकता है।

प्रभावशाली-सुरक्षित भी हो जेनेरिक दवा

केके तलवार

भारत को 'दुनिया का दवाखाना' कहा जाता है। भारत में बनी जेनेरिक दवाओं का निर्यात विश्वभर में होता है। 21वीं सदी के आरंभ तक देश में किसी दवा को पेटेंट उत्पाद के अनुसार न देकर उत्पादन प्रक्रिया के मुताबिक दिया जाता था। इससे भारतीय दवा उद्योग को पेटेंट का उल्लंघन करने का जोखिम उठाए बगैर दवाएं बनाने का मौका मिला। पहले से किसी और की बनी दवा के घटकों को खोजकर उत्पादन करने की स्वदेशी क्षमता का क्रमिक विकास होता चला गया। आज हम दुनिया में जेनेरिक दवाओं के सबसे बड़े आपूर्तिकर्ता हैं, खासकर एचआईवी और एड्स या फिर अन्य जीवन रक्षक वैक्सीन। चूंकि जेनेरिक दवाएं वह होती हैं जिसके घटक हू-ब-हू ब्रांडेड दवाओं वाले होते हैं, इसलिए असर भी समान होता है।

जेनेरिक दवाओं की वकालत करने के पीछे मुख्य कारण है, इनकी कम कीमत क्योंकि इनको बाजार में उतारने से पहले जानवरों या क्लीनिक में इंसानों पर प्रयोग वाली महंगी और अनिवार्य प्रक्रिया से नहीं गुजरना पड़ता। भाव में सस्ती होने के कारण विकासशील मुल्कों के लिए इनका बहुत महत्व है और इस तरह दुनिया का भला होता है। जब बात दवाओं की आए तो कहा जाता है कि गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं होना चाहिए। समाज में ऐसी धारणा भी है कि देश में उपलब्ध जेनेरिक दवाओं में कुछ घटिया हैं। क्या हैरानी इन चिंताओं के कारण मरीज जेनेरिक दवाओं से गुरेज करते हैं, इसलिए महंगी होने के बावजूद रुझान ब्रांडेड दवाओं की ओर है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण जन-औषधि दुकानों पर कम बिक्री है।

राष्ट्रीय दवा आयोग की हालिया अधिसूचना कि चिकित्सकों को केवल जेनेरिक दवाएं ही लिखकर देनी हैं, इसके पीछे मुख्य मंशा सही है। लेकिन इस फैसले ने उपलब्ध जेनेरिक दवाओं की गुणवत्ता वाले गंभीर विषय को भी आगे ला दिया है। चिकित्सकों की चिंताएं भी जायज हैं, जिसको मीडिया ने काफी प्रकाशित किया। राष्ट्रीय दवा आयोग ने जेनेरिक दवाएं लिखने की अनिवार्यता पर फिलहाल अमल न करने का निर्णय लेकर सही किया है। तथापि, जेनेरिक दवाओं की ओर केंद्रित हुआ ध्यान प्रासंगिक है। वास्तव में, जेनेरिक दवाओं का इस्तेमाल करवाने के पीछे उद्देश्य है कि रोगी का इलाज पर अपनी जेब से होने वाला खर्च घट सके और इसके लिए सरकार को गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाएं सुनिश्चित करवाने के हरसंभव उपाय करने चाहिए।

हमारे मुल्क में नकली अथवा घटिया दवाएं होना, कमजोर नियामक तंत्र की वजह से है। ऐसी दवाओं के नतीजे में कई बार रोग में बहुत सी जटिलताएं पैदा हो जाती हैं। पिछले साल, पीजीआईएमईआर चंडीगढ़ में भी ऐसे कई मामले हुए, एक उत्पादक की बनी प्रोपोफोल दवा से मौत तक हुई। गाम्बिया नामक देश में कुछ बच्चों की मौत का संबंध भारत से गई खांसी की दवा से जोड़ा गया है, इससे भारत की 'दुनिया की दवा-धुरी' साख को बट्टा लगा है। घटिया दवाओं से मरीज पर जो बन आती है, उसमें स्वास्थ्य में वांछित सुधार न आना और यहां तक कि रोगी में दवा विशेष के लिए प्रतिरोधकता तक पैदा हो जाती है और यह बहुत गंभीर चिंता का विषय है। प्रभावशाली नियामक तंत्र के अभाव में, कुछ दवा निर्माता लागत में पैसा बचाने के नाना तरीके अपनाते हैं और स्थापित अंतर्राष्ट्रीय उत्पादन मानकों का पालन करने से बचते हैं। हर मामले में भले ही मिलावट और बेईमानी वाले तरीके न भी बरते गए हों, लेकिन लापरवाही और नियमों की अनदेखी करते अकसर पाया जाता है। घटिया दवाएं (चाहे यह संदूषित हो या कम गुणवत्ता वाली) अकसर कोताही या फिर उत्पादन प्रक्रिया में जान-बूझकर कुछ गलत करने का परिणाम है। यह कृत्य कतई अस्वीकार्य है और कड़े से कड़े रूप में इसकी भर्त्सना होनी चाहिये।

सबको अच्छी तरह मालूम है कि अमेरिका और यूरोपियन मुल्कों में जेनेरिक दवा को बतौर एक विकल्प तभी मंजूरी मिलती है, जब वे ब्रांडेड दवाओं जितनी प्रभावशाली और सुरक्षित पाई जाएं। वहां किसी जेनेरिक दवा को मंजूरी पाने के लिए सख्त अवलोकन प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। अमेरिका का ड्रग एंड फूड एडमिनिस्ट्रेशन (एफडीए) विभाग तो दवा उत्पादन कारखानों का निरीक्षण तक करता है ताकि सुनिश्चित हो सके कि दवाएं सर्वोत्तम मानकों की पालना करके बनाई जा रही हैं। इससे मरीज का जेनेरिक दवाओं पर पूरी तरह भरोसा बनता है। आकंड़े खुद बताते हैं आईएमएस संस्थान के मुताबिक जेनेरिक दवाओं ने 2009-19 के बीच दस सालों में अमेरिकी स्वास्थ्य तंत्र के लगभग 2 ट्रिलियन डॉलर बचाए।

इससे सबक लेते हुए हमें अपना नियामक तंत्र मजबूत करना चाहिए। जब तक सख्त गुणवत्ता नियंत्रण प्रणाली स्थापित नहीं हो जाती और गुणवत्ता मानकों का पालन सुनिश्चित न हो तब तक दवाएं कम असरकारक और उनसे रोगी में गंभीर संलग्न जटिलताएं पैदा होने का दोहरा खतरा बना रहेगा। हमारी उत्पादन निर्देशावली का पुनरावलोकन और प्रक्रिया का पालन सुनिश्चित करवाने की फौरन जरूरत है। इसके लिए पूरी तरह प्रशिक्षित व्यावसायिक जांचकर्ताओं से सज्जित परीक्षण शालाओं वाला यथेष्ट तंत्र सुनिश्चित करना होगा। वैधानिक एवं अन्य सुरक्षा मानकों के पालन के लिए कड़ी निगरानी अहम होगी। कानूनी एवं नियामक तंत्र इस तरह बनाया जाए जो कि दवा निर्माताओं में स्व-पालन और स्व-नियंत्रण को प्रोत्साहित करे और ठीक इसी वक्त उल्लंघनकर्ताओं या गलत आचरण करने वालों पर कड़ी दंडात्मक कार्रवाई की शक्ति भी उसके पास हो। भारत में दवाओं की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए जिम्मेवार केंद्रीय दवा मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) को और मजबूत एवं शक्तिशाली बनाना होगा।

नंद के घर आनंद भयो, जय कन्हैया लाल...

हिंदू धर्म में श्री कृष्ण जन्माष्टमी का त्योहार बहुत खास होता है। जन्माष्टमी का त्योहार सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में बसे भारतीय भी पूरी आस्था व उल्लास से मनाते हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान कृष्ण का जन्म भाद्र मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को हुआ था इसलिए इस शुभ तिथि को भगवान कृष्ण के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। भगवान कृष्ण की जन्मस्थली मथुरा में इस त्योहार को बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। कृष्ण जन्माष्टमी के दिन सुबह स्नान व ध्यान आदि करने के बाद घर के बाल गोपाल को नई पोशाक पहनाएं, भोग लगाएं और गोपी चंदन से श्रृंगार करें।

जन्माष्टमी का महत्व

इस पावन दिन देश के सभी मंदिरों का श्रृंगार किया जाता है। भगवान् श्री कृष्णावतार के उपलक्ष्य में झाकियां सजाई जाती हैं। भगवान श्रीकृष्ण का श्रृंगार करके झूला सजाया जाता है फिर उन्हें झूला झुलाया जाता है। स्त्री व पुरुष दोनों ही रात के बारह बजे तक व्रत रखते हैं। रात को बारह बजे शंख तथा घंटों की आवाज से श्रीकृष्ण के जन्म की सुचना चारों दिशाओं में गूंज उठती है। भगवान श्री कृष्ण जी की आरती उतारी जाती है और भोग लगा कर प्रसाद का वितरण किया जाता है।

शुभ मुहूर्त

जन्माष्टमी तिथि पर पूजा करने के लिए सबसे शुभ मुहूर्त 6 सितंबर की मध्यरात्रि 12:02 बजे से 12:48 बजे तक 46 मिनट का ही रहेगा। इस दौरान रोहिणी नक्षत्र भी रहेगा। भगवान कृष्ण का जन्म भी रोहिणी नक्षत्र में ही होगा। वहीं व्रत पारण का समय 7 सितंबर 2023 की सुबह 06.09 बजे के बाद रहेगा। इस कारण स्मार्त संप्रदाय और वैष्णव संप्रदाय के लोग अलग-अलग दिन जन्माष्टमी मनाएंगे। स्मार्त जन अष्टमी तिथि अर्धरात्रि को पड़ रही हो तो उसी दिन जन्माष्टमी मनाते हैं, जबकि वैष्णव सन्यासी उदया तिथि के अनुसार जन्माष्टमी मनाते हैं। इसलिए साल 2023 में स्मार्त जन यानी कि गृहस्थ लोगों को 6 सितंबर 2023 और वैष्णव संप्रदाय के लोगों को 7 सितंबर 2023 को जन्माष्टमी मनाना शुभ रहेगा।

पूजन विधि व व्रत

इस व्रत में अष्टमी के उपवास से पूजन और नवमी के पारणा से व्रत की पूर्ति होती है। उपवास वाले दिन प्रातः स्नानादि से निवृत होकर सभी देवताओं को नमस्कार करके पूर्व या उत्तर को मुख करके बैठें। हाथ में जल, फल और पुष्प लेकर संकल्प करके मध्यान्ह के समय काले तिलों के जल से स्नान कर देवकी जी के लिए प्रसूति गृह बनाएं। अब इस सूतिका गृह में सुन्दर बिछौना बिछाकर उस पर शुभ कलश स्थापित करें। साथ ही देवकी जी की मूर्ति या सुन्दर चित्र की स्थापना करें।

भाग्य को मजबूत बनाने का उपाय

जन्माष्टमी के दिन बाल गोपाल को केसर-मेवा मिश्री साबूदाने या खीर का तुलसी दल डालकर भोग लगाएं लेकिन ध्यान रखें कि खीर में चीन की जगह मिश्री की डली डालें। साथ ही सफेद मिठाई भी अर्पित करें। ऐसा करने से कान्हा की कृपा मिलती है और भाग्य भी मजबूत होता है।

व्यवसाय में उन्नति के लिए उपाय

कृष्ण जन्माष्टमी के दिन सुबह-शाम 11 बार तुलसी की परिक्रमा करें और घी का दीपक जलाएं। इसके बाद 108 बार 'ओम नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र का जप' करें। साथ ही कपूर जलाकर उस पर थोड़ी मिसरी डाल दें और कपूर और मिश्री का दान भी करें।

आर्थिक तंगी होगी दूर करने का उपाय

कर्ज की समस्या से परेशान हैं तो जन्माष्टमी के दिन दक्षिणावर्ती शंख से भगवान कृष्ण का अभिषेक करें। दक्षिणावर्ती शंख को लक्ष्मी का स्वरूप माना गया है और लक्ष्मी पूजा में इस शंख के बिना पूजा पूरी नहीं होती। ऐसा करने से आर्थिक तंगी दूर होती है और लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

जन्माष्टमी की कथा

द्वापर युग के अंत में कंस की बहन देवकी का विवाह यादव कुल में वासुदेव के साथ निश्चित हो गया। जब कंस देवकी को विदा करने के लिए रथ के साथ जा रहा था तो आकाशवाणी हुई, हे कंस! जिस देवकी को तू बड़े प्रेम से विदा कर रहा है उसका आठवां पुत्र तेरा संहार करेगा। आकाशवाणी की बात सुनकर कंस क्रोध से भरकर देवकी को मारने के लिए तैयार हो गया। उसने सोचा न देवकी होगी न उसका कोई पुत्र होगा। वासुदेव जी ने कंस को समझाया कि देवकी की आठवीं संतान से भय है। इसलिए मैं इसकी आठवीं संतान को तुम्हे सौंप दूंगा। कंस ने वासुदेव-देवकी को कारागार में बंद कर दिया। कंस ने देवकी के गर्भ से उत्पन्न होने वाले समस्त बालकों को एक-एक करके निर्दयतापूर्वक मार डाला। भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र में श्रीकृष्ण जी का जन्म हुआ। उनके जन्म लेते ही जेल की कोठरी में प्रकाश फैल गया। वासुदेव-देवकी के सामने शंख, चक्र, गदा एवं पदमधारी चतुर्भुज भगवान ने अपना रूप प्रकट कर कहा, अब में बालक का रूप धारण करता हूं। तुम मुझे तत्काल गोकुल में नन्द के यहां पहुंचा दो और उनकी अभी-अभी जन्मी कन्या को लेकर कंस को सौंप दो। वासुदेव जी ने वैसा ही किया और उस कन्या को लेकर कंस को सौंप दिया।

हंसना मना है

प्रेमी- हसीन औरत कभी किसी का पीछा नहीं करती। प्रेमिका- क्यों? प्रेमी- क्या तुमने कभी किसी चूहेदान को चूहे के पीछे भागते देखा है?

लड़के ने लड़की को आइसक्रीम लाकर दी। लड़की-थैंक्स, लड़का- सिर्फ थैंक्स! लड़की -तो तुम्हें किस चाहिए न? लड़का- बकवास मत कर, मुझे आधी आइसक्रीम चाहिए!

रामू- यार जब तुम्हें गर्मी लगती है तो क्या करते हो। ढोलू- तब हम एसी के सामने बैठ जाते हैं। रामू- और जब बहुत ज्यादा गर्मी हो तो क्या करते हो? ढोलू- जब ज्यादा गर्मी पड़ती हैं तो फिर एसी को ऑन कर देते हैं।

एक लड़का अपनी गर्लफ्रेंड से मिलने गया। कुछ बातचीत के बाद लड़की चाय बनाने गई। लड़की का फोन सोफे पर था, लड़के ने सोचा देखता हूं फोन में मेरा नंबर किस नाम से सेव है स्वीटू या जानु? लड़के ने अपने फोन से मिस कॉल दिया, लड़की फोन पर उसका नाम लिखा आया मुर्गा न. 5..

एक खूबसूरत लडकी बस स्टैंड पर खडी थी। एक नौजवान बोला- चांद तो रात में निकलता हैं, आज दिन में कैसे निकल आया? लडकी बोली- अरे उल्लू तो रात को बोलता था, आज दिन में कैसे बोल रहा हैं।

कहानी — सुंदरता

एक कौआ सोचने लगा कि पंछियों में मैं सबसे ज्यादा कुरूप हूं। न तो मेरी आवाज ही अच्छी है, न ही मेरे पंख सुंदर हैं। मैं काला-कलूटा हूं। ऐसा सोचने से उसके अंदर हीनभावना भरने लगी और वह दुखी रहने लगा। एक दिन एक बगुले ने उसे उदास देखा तो उसकी उदासी का कारण पूछा। कौवे ने कहा- तुम कितने सुंदर हो, गोरे-चिट्टे हो, मैं तो बिल्कुल स्याह वर्ण का हूं। मेरा तो जीना ही बेकार है। बगुला बोला- दोस्त मैं कहां सुंदर हूं। मैं जब तोते को देखता हूं, तो यही सोचता हूं कि मेरे पास हरे पंख और लाल चोंच क्यों नहीं है। अब कौए में सुन्दरता को जानने की उत्सुकता बढ़ी। वह तोते के पास गया। बोला- तुम इतने सुन्दर हो, तुम तो बहुत खुश होते होगे? तोता बोला- खुश तो था लेकिन जब मैंने मोर को देखा, तब से बहुत दुखी हूं, क्योंकि वह बहुत सुन्दर होता है। कौआ मोर को ढूंढने लगा, लेकिन जंगल में कहीं मोर नहीं मिला। जंगल के पक्षियों ने बताया कि सारे मोर चिड़ियाघर वाले पकड़ कर ले गये हैं। कौआ चिड़ियाघर गया, वहां एक पिंजरे में बंद मोर से जब उसकी सुंदरता की बात की, तो मोर रोने लगा। और बोला- शुक्र मनाओ कि तुम सुंदर नहीं हो, तभी आजादी से घूम रहे हो वरना मेरी तरह किसी पिंजरे में बंद होते।

शिक्षा-दूसरों से तूलना करके दु:खी होना बुद्धिमानी नहीं है। असली सुन्दरता हमारे अच्छे कार्यों से आती है।

7 अंतर खोजें

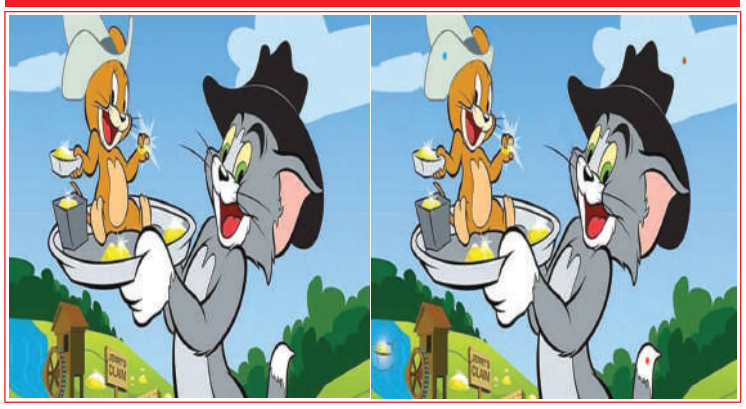

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

आय में वृद्धि होगी। शेयर मार्केट से लाभ होगा। नौकरी में प्रभाव वृद्धि होगी। व्यापार-व्यवसाय लाभदायक रहेगा। घर-परिवार में सुख-शांति रहेगी। जल्दबाजी न करें।

वृषभ

पूजा-पाठ में मन लगेगा। कानूनी अड़चन दूर होगी। जल्दबाजी से हानि संभव है। थकान रहेगी। कुसंगति से बचें। निवेश शुभ रहेगा। पारिवारिक सहयोग प्राप्त होगा।

मिथुन

आय में निश्चितता रहेगी। शत्रुभय रहेगा। घर-परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। वाणी पर नियंत्रण रखें। चोट व दुर्घटना से बड़ी हानि हो सकती है।

कर्क

प्रेम-प्रसंग में जोखिम न लें। व्यापार में लाभ होगा। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। निवेश में सोच-समझकर हाथ डालें। शत्रु पस्त होंगे। विवाद में न पड़ें।

सिंह

परीक्षा व साक्षात्कार आदि में सफलता प्राप्त होगी। स्थायी संपत्ति से बड़ा लाभ हो सकता है। समय पर कर्ज चुका पाएंगे। नौकरी में अधिकारी प्रसन्न तथा संतुष्ट रहेंगे।

कन्या

मनपसंद भोजन का आनंद प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय लाभप्रद रहेगा। समय की अनुकूलता का लाभ मिलेगा। पार्टी व पिकनिक का आनंद मिलेगा।

तुला

मेहनत अधिक व लाभ कम होगा। किसी व्यक्ति के उकसाने में न आएं। शत्रुओं की पराजय होगी। व्यापार-व्यवसाय लाभदायक रहेगा। आय में निश्चितता रहेगी।

वृश्चिक

जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। मेहनत का फल मिलेगा। कार्यसिद्धि होगी। निवेश लाभदायक रहेगा। व्यापार-व्यवसाय में मनोनुकूल लाभ होगा।

धनु

व्यापार मनोनुकूल लाभ देगा। जोखिम बिलकुल न लें। उत्साहवर्धक सूचना प्राप्त होगी। भूले-बिसरे साथियों से मुलाकात होगी। विरोधी सक्रिय रहेंगे।

मकर

बेरोजगारी दूर करने के प्रयास सफल रहेंगे। कारोबारी बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं। निवेश में सोच-समझकर हाथ डालें। आशंका-कुशंका रहेगी।

कुम्भ

व्यापार-व्यवसाय लाभदायक रहेगा। आय होगी। फालतू खर्च पर नियंत्रण रखें। बजट बिगड़ेगा। कर्ज लेना पड़ सकता है। शारीरिक कष्ट से बाधा उत्पन्न होगी।

मीन

उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। शेयर मार्केट से बड़ा लाभ हो सकता है। संचित कोष में वृद्धि होगी। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। यात्रा लाभदायक रहेगी।

कम बजट की फिल्मों के चलते आलिया के साथ नहीं करता काम : अनुराग

अनुराग कश्यप मशहूर फिल्म निर्माताओं में से एक हैं। उन्होंने कई दमदार फिल्मों को बड़े पर्दे पर उतारा है। अनुराग की फिल्मों का बजट बहुत ज्यादा नहीं होता, लेकिन उनकी फिल्में लोगों को काफी पसंद आती है। अब हाल ही में, अनुराग ने एक इंटरव्यू में आलिया के साथ काम करने को लेकर बड़ा बयान दिया है। हाल ही में, जूम को दिए एक इंटरव्यू में गैंग्स ऑफ वासेपुर के निर्देशक अनुराग कश्यप ने आलिया भट्ट के बारे में खुलकर बात की और बताया कि कैसे वह उनके काम के बहुत बड़े फैन हैं। उन्होंने अभिनेत्री को देश के सर्वश्रेष्ठ कलाकारों में से एक बताया। अनुराग बोले- जब उन्हें आलिया का काम पसंद आता है, तो वह हमेशा उनसे संपर्क करते हैं, लेकिन जब उनका काम पसंद नहीं आता, तो वह चुप रहते हैं। आगे बात करते हुए उन्होंने कहा कि चूंकि वह कम बजट की फिल्में बनाते हैं, इसलिए वह आलिया जैसे कलाकारों के साथ काम नहीं कर सकते। अगर यह मेरी फिल्म के बजट और गतिशीलता को प्रभावित नहीं करता है तो मैं (उनके साथ काम करना) पसंद करूंगा, लेकिन इसे दूसरी तरफ से भी आना होगा। इसके अलावा उन्होंने काम को लेकर कहा कि अगर कोई अभिनेता उनके साथ काम करने से झिझकता है, तो वह तुरंत पीछे हट जाते हैं। मैं इच्छाधारी सोच में विश्वास नहीं करता और ना ही मैं एक से ज्यादा बार एक्टर्स को अपने साथ काम करने के लिए कहता हूं। अगर वो मुझे स्क्रिप्ट में चेंज करने के लिए कहते हैं, तो मैं करता हूं, लेकिन अगर वो झिझकते हैं तो मैं पीछे हट जाता हूं। क्योंकि अगर उनका दिल इसमें नहीं है, तो आप तुरंत स्क्रीन पर बता सकते हैं। आलिया ने बॉलीवुड में स्टूडेंट ऑफ द ईयर से अपने करियर की शुरुआत की है। इसके बाद एक से बढ़कर एक कई सुपरहिट फिल्मों में काम किया। बॉलीवुड फिल्मों से लेकर हॉलीवुड में उनकी आने वाली फिल्म हार्ट ऑफ स्टोन तक आलिया भट्ट ने एक लंबा सफर तय किया है। अनुराग कश्यप एक जाने-माने फिल्म निर्माता हैं। वो अक्सर सामाजिक और राजनीतिक जैसे मुद्दों पर अपनी राय रखते हुए नजर आते हैं।

इस हॉलीवुड फिल्म में नजर आएंगी आलिया

पापा नहीं चाहते थे कि मैं एक्टर बनूं : राजवीर

बॉलीवुड एक्टर सनी देओल एक ओर जहां अपनी हालिया रिलीज फिल्म गदर 2 के जरिए बॉक्स ऑफिस पर कमाई के रिकॉर्ड तोड़ रहे हैं। वहीं, दूसरी ओर अभिनेता के छोटे बेटे राजवीर देओल दोनों से एक्टिंग की दुनिया में कदम रख रहे हैं। बीते दिन यानी चार सितंबर को दोनों' का ट्रेलर जारी कर दिया गया है। इस फिल्म का निर्देशन बी-टाउन के मशहूर डायरेक्टर सूरज बड़जात्या के बेटे अवनीश एस. बड़जात्या ने किया है। अवनीश इस फिल्म के जरिए निर्देशन की दुनिया में कदम रखने वाले हैं। फिल्म मे राजवीर देओल और पूनम ढिल्लों की बेटी पालोमा ढिल्लों लीड रोल में नजर आ रही हैं। ट्रेलर लॉन्च इवेंट में, राजवीर ने खुलासा किया कि उनके पिता सनी देओल नहीं चाहते थे कि उनका बेटा अभिनेता बने। एक्टर चाहते थे कि वह पढ़ाई करें। उन्होंने कहा, आप एक पल के लिए खुश होते हैं और काम न मिलने से दुखी होते हैं। मेरा मतलब है, पिताजी को 22 साल बाद गदर 2 मिली जो बॉक्स ऑफिस पर हिट हुई। इसलिए वे चिंतित थे क्योंकि यह मानसिक रूप से बहुत थका देने वाली बात थी, लेकिन मुझे एक्टिंग से प्यार हो गया, लेकिन यह मेरे लिए काफी नहीं है। पापा चाहते थे कि मैं एक्टिंग नहीं कुछ और करूं। फिल्म का ट्रेलर लोगों को काफी पसंद आ रहा है। फिल्म के लिए अपना उत्साह साझा करते हुए, एक यूजर ने लिखा, राजश्री अपने आप में एक भावना है... नई पीढ़ी को इस बैनर के तहत अपनी यात्रा शुरू करते हुए देखकर मैं कितना खुश हूं, इसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता! एक नई शुरुआत, नई कहानियां, नई कथाएं... अवनीश, राजवीर और पलोमा को शुभकामनाएं। ट्रेलर पर अपनी प्रतिक्रिया साझा करते हुए एक दूसरे यूजर ने लिखा, मैं बड़जात्या परिवार, विशेष रूप से अवनीश, राजवीर और पलोमा के लिए बहुत खुश हूं! इस फिल्म के लिए सुपर डुपर उत्साहित हूं।

बॉलीवुड | मसाला

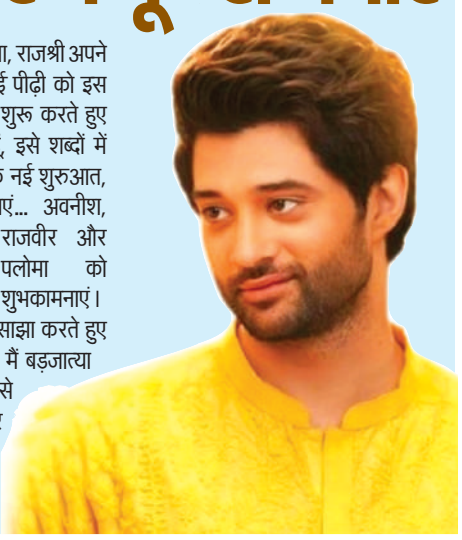

बॉलीवुड | मन की बात

बिग बॉस 14 से निकलते ही मिली रेप की धमकी: जैस्मिन

टी वी की क्यूट एक्ट्रेस जैस्मिन भसीन अपने करियर में काफी अच्छा कर रही हैं और अब तो खबर है कि बॉलीवुड की राह भी पकड़ चुकी हैं। अपने चुलबुले स्वभाव और दिलकश अदाओं की बदौलत ये एक्ट्रेस लाखों दिलों पर राज करती है। कई पॉपुलर सीरियल में काम करने के अलावा हाल ही में रियलिटी शो 'बिग बॉस 14' में हिस्सा लेना उनके करियर के लिए बेहद फायदेमंद साबित हुआ। हालांकि इसकी वजह से जैस्मिन को बुरे अनुभवों का भी सामना करना पड़ा, जिसका उन्होंने खुलासा किया है। मीडिया से बातचीत करते हुए जैस्मिन भसीन ने अपनी बिग बॉस जर्नी के बारे में खुलकर बात की। इस दौरान एक्ट्रेस ने ऑनलाइन ट्रोलर्स से रेप की धमकियां मिलने को याद किया और बताया कि वह इससे कैसे निपटीं। जैस्मीन ने आगे बताया कि इस तरह से ट्रोल होने और धमकियां मिलने के बाद वह काफी डर गई थीं। इसका असर मानसिक स्वास्थ्य पर काफी गहरा पड़ा था। हालात इतने बुरे थे कि उन्हें मेंडल हेल्थ को लेकर डॉक्टर से मदद लेनी पड़ी। जैस्मीन ने कहा कि इस बुरे दौर में उनकी फैमिली और करीबी दोस्तों ने उनका साथ दिया। जैस्मिन भसीन ने बताया कि ट्रोलिंग तो छोड़िए जब मैं बिग बॉस के घर से बाहर निकली तो लोगों ने मेरे खिलाफ जमकर जहर उगला और मुझे खूब गालियां दीं। जब इतने पर भी ट्रोल करने वालों का मन नहीं भरा तो उन्होंने मुझे जान से मारने और रेप करने की धमकियां तक दीं। इतना सब कुछ मुझे सिर्फ इसलिए झेलना पड़ा, क्योंकि मैंने एक ऐसे शो में काम किया, जिसमें लोगों ने मुझे पसंद नहीं किया। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए जैस्मिन ने कहा कि उस दौरान, हेट इतनी ज्यादा थी कि इसने वास्तव में मुझे डिप्रेशन में डाल दिया था। एक्ट्रेस ने बताया कि बाद में उन्हें समझ आया कि उन्हें रेप की धमकियां भेजने वाले ऑनलाइन ट्रोलर्स की कोई पहचान नहीं है।

अजब-गजब | इस रहस्यमयी जगह पर तेंदुए और इंसान रहते हैं साथ-साथ

100 साल हो गए, पर नहीं हुई अब तक कोई अनहोनी!

एक वक्त था, जब इंसान जंगलों में रहा करता था। वो खुद को खतरनाक जीवों से बचाना और उनके साथ रहना भी जानता था। हालांकि बाद में बस्तियां बसीं और इंसानों और जानवरों के बीच की ये खास बॉन्डिंग खत्म हो गई। इंसानों ने कई जानवरों को पालतू बना लिया और जो जंगली रह गए, उनसे दूरी बनाकर रखने लगा। आपने कभी सोचा है कि आज के युग में भी क्या इंसान और जानवर साथ रह सकते हैं? जब इंसान के हाथ में हथियार होते हैं, तो वो जानवरों का शिकार करता है और जब जानवर खूंखार होता है, तो वो इंसानों पर भी भारी पड़ जाता है। हालांकि अपने ही देश में एक जगह ऐसी भी है, जहां इंसानों और खतरनाक शिकारी माने जाने वाले तेंदुओं के बीच ऐसा सामंजस्य बना हुआ है कि ये साथ-साथ रहते हैं। एक-दो नहीं बल्कि करीब 10 गांवों में सैकड़ों तेंदुओं ने इंसानों के साथ अपना घर बना रखा है। वेबसाइट ऑडिटी सेंट्रल के मुताबिक पिछले 100 साल से तेंदुए और इंसान एक साथ रह रहे हैं। इसके बीच प्यार और सामंजस्य ऐसा बन चुका है कि तेंदुए इंसान या उनके बच्चों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाते। लोगों को भी तेंदुओं के साथ रहने की ऐसी आदत पड़ चुकी है कि उन्हें सामने देखकर भी कोई बच्चा भी उनसे नहीं डरता। बताया जाता है कि एक बार एक तेंदुआ बच्चे को मुंह में दबाकर ले गया था लेकिन फिर जंगल में जाने से पहले ही उसे छोड़ गया। अब कस्बे के से दसों गांवों में इस तरह तेंदुए घूमते हैं कि लोग उन्हें अपनी ही तरह समझने लगे हैं। इस कस्बे में रबारी जनजाति के लोग रहते हैं। बताया जाता है कि ये जनजाति चरवाहों की है और ये लोग हज़ारों साल पहले अफगानिस्तान के रास्ते इरान से होकर राजस्थान आ गए थे। भगवान की शिव की उपासना करने वाले ये लोग मानते हैं कि तेंदुए भगवान की ओर से भेजे गए उनके रक्षक है। वे कभी उन्हें नुकसान नहीं पहुंचाते और लोग भी उन्हें प्यार करते हैं। दिलचस्प ये भी है कि अगर वे उनके मवेशियों को भी खा लें, तो उन्हें वे बलि समझकर माफ कर देते हैं।

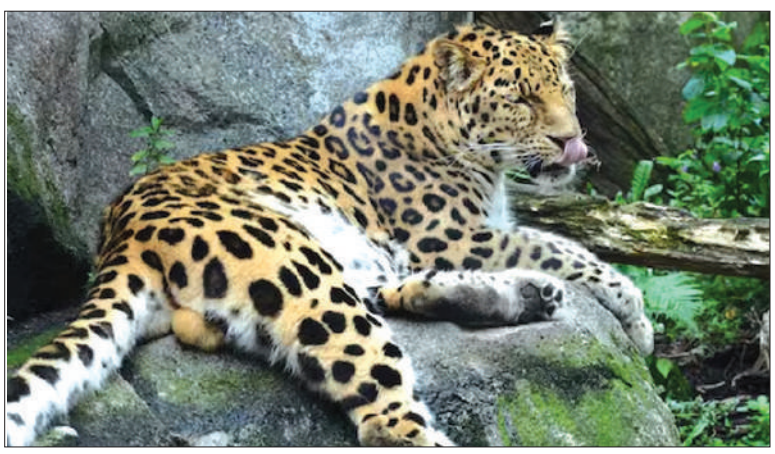

दुनिया से 10 कदम आगे है जापान, वहां किचन में ऐसे बर्तन होता है इस्तेमाल

भारत में चीन के बने सामान काफी बिकते हैं। ये क्रिएटिव के साथ साथ सस्ते तो होते हैं लेकिन टिकाऊ नहीं होते। इस वजह से चीन के बने सामान लंबे समय तक चल नहीं पाते। लोग भी इन्हें खरीदने से पहले कई बार सोचते हैं। खासकर किचन के लिए बनाए गए सामान अगर चीन के बने हुए हैं तब तो सबसे ज्यादा अनसेफ माने जाते हैं। किचन में बनाया जाने वाला खाना गर्म होता है। अगर कोई दुर्घटना हुई तो सीधे जान पर खतरा बन सकता है। बात अगर तकनीक की करें, तो चीन से भी काफी आगे है जापान। जापानी तकनीक के आगे दुनिया के कई देश फेल हो जाते हैं। इसके इन्वेंशन आपको भी हैरान कर देंगे। ना सिर्फ इन इन्वेंशन में क्रिएटिविटी होती है बल्कि ये लोगों की लाइफ काफी आसान भी बना देते हैं। सोशल मीडिया पर जापान द्वारा बनाए गए ऐसे ही कुछ किचन इक्विपमेंट्स का वीडियो शेयर किया गया। इस वीडियो को देखने के बाद आप भी वाह करने से खुद को रोक नहीं पाएंगे। वायरल हो रहे वीडियो को देखने के बाद आप जापानी इन्वेंशन के फैन हो जायेंगे। इसमें किचन के लिए ऐसी कड़ाही बनाई गई है, जिसे चलाने के लिए इंसान की जरुरत ही नहीं होगी। इस कड़ाही में स्पेशल तरीके के औजार लगे हैं, जो अपने आप ही खाने को टॉस करते हैं। इससे खाना चलाते हुए आपके हाथ के जलने की समस्या खत्म हो जाएगी। ये कड़ाही काफी आराम से खाना चलने में मदद करती दिखाई दी। वीडियो को अभी तक लाखों बार देखा जा चुका है। कई लोगों ने इन कड़ाहियों को देखकर उसकी तारीफ की। उन्हें यकीन ही नहीं हुआ कि ऐसे भी खाना बनाया जा सकता है। सिर्फ कड़ाही में तेल और सब्जी डालो और अपने आप ही खाना बनता जाएगा। कड़ाही को चलाने के लिए किसी की जरुरत नहीं पड़ेगी। कई ने ऐसे कड़ाही कहां से ऑर्डर करने है, इसे लेकर भी जानकारी मांगी। हालांकि, कुछ लोगों ने बताया कि ये तो आलसीपन की हद है।

भाजपा को किसानों से कोई लेना देना नहीं : सुरजेवाला

कांग्रेस प्रदेश प्रभारी ने शाह और गडकरी से पूछे सवाल, शिवराज को बताया हिट विकेट प्लेयर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। मध्य प्रदेश चुनाव प्रभारी रणदीप सुरजेवाला ने केंद्रीय मंत्री अमित शाह और नितिन गडकरी से पांच सवाल पूछे। उन्होंने राजनाथ सिंह के सीएम शिवराज को धोनी कहने पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि वह हिट विकेट प्लेयर है। रणदीप सुरजेवाला ने कांग्रेस मुख्यालय में मीडिया से चर्चा करते हुए भाजपा की जन आशीर्वाद यात्रा के शुभारंभ पर आ रहे अमित शाह और नितिन गडकरी को लेकर कहा कि इनको जनता और किसानों से कुछ नहीं लेना देना है।

उन्होंने खंडवा में किसानों के सुसाइड पर कहा कि 18 साल में 25 हजार से ज्यादा किसान आत्महत्या कर चुके है। खंडवा में नितिन गडकरी जश्न मनाने आ रहे है। आज किसान परेशान है। सीएम शिवराज के महाकाल लोक में अनुष्ठान पर सुरजेवाला ने कहा कि महाकाल लोक के दोषियों की आराधना महाकाल बाबा सुनेंगे। यह प्रदेश की जनता को भगवान के भरोसे छोड़ मौत की खेती कराने में लगे हुए है।

उन्होंने अमित शाह और नितिन गडकरी से सवाल पूछते हुए कहा कि श्योपुर और खंडवा में किसानों की फसल खराब हो गई है। वह किसानों की पीढ़ा समझते है। किसान परेशान है। भाजपा अवसरवादी यात्रा कर रही है। किसानों से यह धोखबाजी क्यों? तीसरा खेती के लिए ना नहरो से पानी छोड़ा ना बिजली दी। आप वोट की फसल काटने आए है? ऐसा क्यों? किसान को सरकार राहत क्यों नहीं दे रही? प्रदेश में 15 हजार मेगावॉट की जरूरत है। बिजली प्रोड्क्शन की क्षमता 20 हजार की की है। बीच सीजन में उत्पादन बंद क्यों किया गया? 10 रुपए में बिजली खरीद कर किसे फायदा पहुंचा रहे?

धोनी का किया अपमान

राजनाथ सिंह के शिवराज सिंह चौहान को धोनी कहने पर बोले की इतना बड़ा अपमान हमारे सबसे बेहतरीन क्रि केटर का शायद किसी ने नहीं किया होगा। वजह यह है कि वह एक ऐसे फिसड्डी प्लेयर हैं, जिनको ट्रायल में भी कोई मौका नहीं देगा। क्रिकेट खेलने की बात तो दूर है। क्योंकि जब वह बेट पकड़ते हैं तो हिट विकेट करते हैं, तो यह हिट विकेट प्लेयर है।

बेरोजगारी, महंगाई व मुआवजे की बात नहीं करेंगे

अमस के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा शर्मा के रिपब्लिक ऑफ भारत शेयर करने पर सुरजेवाला ने कहा कि यह लोग इसी प्रकार की बातों में आपका ध्यान भटकाएंगे। यह भी बेरोजगारी, खेती, सूखे, मुआवजे और महंगाई की बात नहीं करेंगे। यह केवाल शब्दों प्रपंच और जाल में आपको फसाएंगे।

सनातन धर्म और संस्कृति हम नहीं होंगे तब भी रहेगी

स्टालिन के बेटे दयानिधि के बयान पर सुरजेवाला ने कहा कि सनातन धर्म और सनातन संस्कृति हमारे इतिहास, वर्तमान और भविष्य का हिस्सा है। वह युग युगांतर तक चलती रहेगी। भाषा का अंतर हो तो कई बार भाषा के बोल में कोई शब्द किसी से निकला हो। मैंने नहीं सुना क्योंकि मुझे कन्नड़ नहीं आती। देश एक है, सूत्र एक है पूरा देश कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक एक है। सनातन धर्म सनातन संस्कृति कल थी आज है और कल रहेगी जब आप हम नहीं होंगे तब भी रहेगी।

सीएम की हालत ऐसी करेंगे जो उन्होंने सोचा नहीं होगा : विपिन

आगर-मालवा से कांग्रेस विधायक विपिन वानखेड़े के विवादित बोल सामने आए हैं। किसानों के साथ प्रदर्शन के दौरान विपिन वानखेड़े ने कहा, अगर किसानों को सूखे का मुआवजा नहीं मिला तो हम सीएम शिवराज सिंह चौहान की वो हालत करेंगे, जो उन्होंने कभी सोचा नहीं होगा। पांच जिलों की पुलिस बुला लेना। साथ ही उन्होंने कहा कि जन आशीर्वाद यात्रा को जिले में घुसने नही देंने की भी धमकी भी दे डाली। बता दें कि इस समय क्षेत्र में बारिश न होने के कारण किसानों के माथे पर चिंता की लकीरें हैं और बारिश की लंबी खेंच से किसानों की फसलों पर तबाही की चिंता है। यदि समय रहते बारिश नहीं हुई तो निश्चित ही किसानों की फसलें खराब हो जाएंगी। इसको लेकर मंगलवार को कांग्रेस के बैनर तले सैकड़ों की संख्या में किसान कलेक्टर कार्यालय पंहुचे और ज्ञापन के जरिए मांग की गई की फसलों का सर्वे कराया जाए, ताकि खराब होने की स्थिति में उचित मुआवजा मिल सके। इस दौरान बड़ी संख्या में कांग्रेसी उपस्थित रहे।

सुरजेवाला मेरे और मेरी पार्टी के बीच न आएं : उमा भारती

» मैं उनसे सहमत उनकी मर्जी जो करें : सुरजेवाला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। मध्य प्रदेश में चुनाव की तारीखों के पास में आते आते चुनावी माहौल गरमाता जा रहा है। जन आशीर्वाद यात्रा को लेकर कांग्रेस चुनाव प्रभारी रणदीप सुरजेवाला के बयान पर उमा भारती ने पलटवार किया है। उमा भारती ने सुरजेवाला को नसीहत देते हुए कहा कि मेरे और मेरी पार्टी के बीच में ना आइए, अपना घर संभालिए।

वहीं, इस पर रणदीप सुरजेवाला ने प्रतिक्रि या देते हुए कहा कि मैं मेरी बहन से सहमत हूं उनका घर है, वह लड़े सर फोड़े एक दूसरे का अपमान करें, एक दूसरे को निकाले, तिरस्कार करें, बेइज्जत करें उनकी मर्जी। बता दें रणदीप सुरजेवाला लगातार भाजपा

को घेर रहे है। उन्होंने जन आशीर्वाद यात्रा में पूर्व सीएम उमा भारती को नहीं बुलाने पर भाजपा को घेरते हुए कहा था कि जो लोग अपने बुजुर्गों का अपमान करते है उनको भगवान भी माफ नहीं करते हैं। सुरजेवाला ने कहा था कि भाजपा की आदत अपने सब नेताओं को अपमानित करने की रही है। मोदी और शिवराज सरकार ने लगातार अपने वरिष्ठ लोगों को दरकिनार किया है।

विकास के मौसेरे भाई ने की थी भाजपा कार्यकर्ता की हत्या

विनय हत्याकांड : केंद्रीय मंत्री कौशल किशोर का रिश्तेदार है मुख्य आरोपी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। भाजपा कार्यकर्ता विनय श्रीवास्तव हत्याकांड में एक बड़ा खुलासा हुआ है। पुलिस ने जिसको मुख्य आरोपी अंकित वर्मा बता विनय को गोली मारने का दावा किया था वह केंद्रीय मंत्री कौशल किशोर का रिश्तेदार है। वह मंत्री की भाभी की बहन का बेटा है। मतलब विकास किशोर का मौसेरा भाई। अब ऐसी आशंका बढ़ रही है कि विनय की हत्या के पीछे कोई बड़ी व निजी वजह है।

फिलहाल पुलिस की विवेचना जारी है। मोबाइल नंबरों की कॉल डिटेल, संदिग्धों की लोकेशन आदि खंगाली जा रही है। क्योंकि, तमाम सवाल अभी भी अनसुलझे हैं। ठाकुरगंज के फरीदीपुर इलाके में मंत्री कौशल किशोर के आवास पर 31 अगस्त को भाजपा कार्यकर्ता विनय श्रीवास्तव व उसके दोस्त मौजूद थे। एक सितंबर को तड़के विनय की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। पुलिस ने वारदात का खुलासा कर तीन आरोपियों अंकित वर्मा, अजय रावत और शमीम को गिरफ्तार किया था। दावा किया था कि जुए के विवाद में वारदात को अंजाम दिया गया। गोली अंकित वर्मा ने मारी थी। दो सितंबर को आरोपी कोर्ट में पेश किए गए थे। जहां से जेल भेजे गए थे। अब एक बड़ी जानकारी सामने आई। दरअसल आरोपी अंकित वर्मा मंत्री की भाभी की बहन का लड़का है। वह अपने मौसेरे भाई व मंत्री पुत्र विकास के साथ ही अधिकतर रहता था। वारदात की रात भी वह उसी आवास पर था। साक्ष्यों के आधार पर पुलिस ने उस पर कार्रवाई की थी।

निजी रंजिश होने की आशंका

विनय लंबे समय से मंत्री का करीबी था। विकास किशोर के साथ साए की तरह रहता था। उस पर मंत्री व विकास दोनों आंख बंद कर भरोसा करते थे। यही वजह है कि थार कार तक उसकी मां के नाम ली थी। अन्य कुछ जमीन उसके नाम पर खरीदने की भी बात सामने आ रही है। चूंकि आरोपी अंकित मंत्री का रिश्तेदार निकला है। ऐसे में अंदेशा ये भी हो गया है कि कहीं कोई उससे निजी रंजिश तो नहीं थी। जिसकी वजह से उसका कत्ल किया गया। पुलिस भले ही आरोपियों को गिरफ्तार कर वारदात का खुलासा कर चुकी है लेकिन अभी भी कई ऐसे पहलू हैं, जिन पर तफ्तीश हो रही है। सूत्रों के जरिये एक और अहम जानकारी सामने आई है। दरअसल विकास लाइसेंसी पिस्टल को लेकर पहले से ही लापरवाही बरतता रहा है। वह अपने दोस्तों को भी पिस्टल रखने को दे देता था। इसमें विनय भी शामिल है। उस दिन भी जब विकास दिल्ली गया तो दोस्तों को ही पिस्टल देकर गया था। हालांकि पुलिस का कहना था कि बेड पर तकिये के नीचे पिस्टल रखी थी। ये पिस्टल उसी में से किसी ने रखी थी।

कोको गॉफ अमेरिकी ओपन के सेमीफाइनल में

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

न्यूयॉर्क। अमेरिका की 19 वर्ष की कोको गॉफ पहली बार अमेरिकी ओपन के सेमीफाइनल में पहुंच गई जिन्होंने लाटविया की येलेना ओस्टापेंको को 6-0, 6- 2 से मात दी। वह 2001 में सेरेना विलियम्स के बाद अमेरिकी ओपन सेमीफाइनल में पहुंचने वाली देश की सबसे युवा महिला खिलाड़ी बन गई। पिछले 17 मैचों में यह उनकी 16वीं जीत थी और अब उनका सामना चेक गणराज्य की दसवीं रैंकिंग वाली कैरोलिना मुकोवा से होगा।

फ्रेंच ओपन फाइनल खेलने वाली मुकोवा ने रोमानिया की सोराना क्रिस्टी को 6-0, 6-3 से हराया। पिछले साल वह अमेरिकी ओपन के पहले दौर से बाहर हो गई थी। पुरूष वर्ग में 23 बार के ग्रैंडस्लैम चैम्पियन नोवाक जोकोविच ने नौवीं रैंकिंग वाले अमेरिका के टेलर फ्रिट्ज को 6-1, 6-4, 6- 4 से हराया। अब उनका सामना फ्रांसिस टियाफो या गैर वरीय अमेरिकी बेन शेल्टन से होगा।

प्रणय और सेन चाइना ओपन के पहले दौर में बाहर

बीजिंग।विश्व चैम्पियनशिप के कांस्य पदक विजेता एचएस प्रणय को यहां मलेशिया के एनजी जे योंग से तीन गेम तक चले मैच में हारकर चाइना ओपन सुपर 1000 बैडमिंटन टूर्नामेंट के पहले दौर में बाहर हो गए। विश्व में छठे नंबर के भारतीय खिलाड़ी को एक घंटे छह मिनट तक चले मैच में मलेशिया के विश्व में 22वें नंबर के खिलाड़ी से 12-21 21-13 18-21 से हार का सामना करना पड़ा।राष्ट्रमंडल खेलों के मौजूदा चैंपियन लक्ष्य सेन भी पहले दौर से आगे नहीं बढ़ पाए। उन्हें डेनमार्क के एंडर्स एंटोनसेन से 21-23 21-16 9-21 हार झेलनी पड़ी। यह मैच एक घंटे 18 मिनट तक चला। इसके बाद प्रियांशु राजावत को इंडोनेशिया के शेसार हिरेन रुस्तावितो से 13-21, 24-26 से हार का सामना करना पड़ा जिससे पुरुष एकल में भारतीय चुनौती समाप्त हो गई। महिला युगल में त्रिसा जॉली और गायत्री गोपीचंद की जोड़ी चेन किंग चेन और जिया यी फैन की चीन की शीर्ष वरीयता प्राप्त जोड़ी से 18-21, 11-21 से हार गई। पीवी सिंधू के एशियाई खेलों पर ध्यान केंद्रित करने के कारण आखिरी क्षण में हट जाने के कारण महिला एकल में भारत की कोई भी खिलाड़ी भाग नहीं ले रही है।

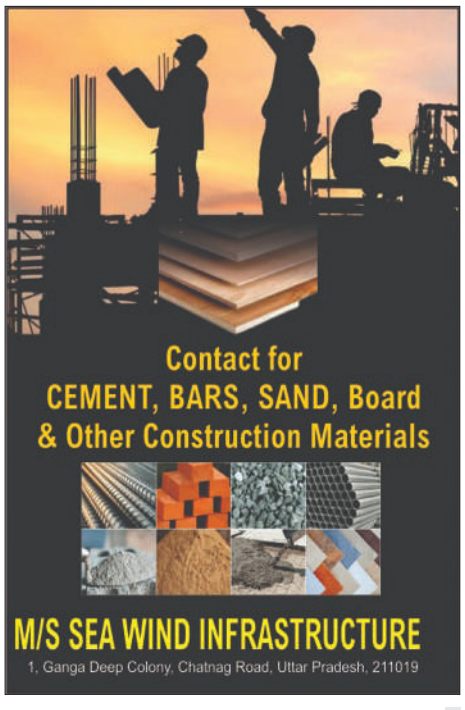

देश को अंधेरे में न रखे सरकार : विपक्ष

विशेष सत्र के एजेंडे में पारदर्शिता बनाए, सोनिया गांधी लिखेंगी प्रधानमंत्री मोदी को पत्र

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी आगामी सत्र के दौरान लोकसभा में महिला आरक्षण विधेयक को जल्द पारित कराने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखेंगी। मामले की जानकारी रखने वाले नेताओं ने कहा कि कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर संसद के आगामी विशेष सत्र में सरकार के एजेंडे को बताने और कई मुद्दों पर चर्चा करने की विपक्ष की मांग के बारे में उन्हें सूचित करने के लिए कहेंगी।

इससे पहले भारतीय गठबंधन के विपक्षी दलों ने मांग की कि सरकार 18 से 22 सितंबर तक संसद के विशेष सत्र के एजेंडे में पारदर्शिता बनाए रखे और

देश को अंधेरे में न रखे, साथ ही उन्होंने महिला आरक्षण विधेयक को जल्द पारित करने का भी आह्वान किया। वपक्षी दलों ने आगामी सत्र में एक साथ चलने और अडानी मुद्दे को भी उठाने का फैसला किया। उन्होंने भारत पार्टियों की पहली संयुक्त सार्वजनिक रैली मध्य प्रदेश में और अगली बैठक भोपाल में आयोजित करने का भी निर्णय लिया।

बैठक में खरगे और कई अन्य कांग्रेस नेताओं के अलावा द्रमुक नेता टीआर बालू, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की नेता सुप्रिया सुले, तृणमूल कांग्रेस के डेरेक ओब्रायन, जनता दल (यूनाइटेड) के राजीव रंजन सिंह, आम आदमी पार्टी के संजय सिंह, शिवसेना (यूबीटी) के संजय राउत, समाजवादी पार्टी के एसटी हसन और कुछ अन्य दलों के नेता शामिल थे।

बैठक के बाद खरगे ने एक्स पर पोस्ट किया, सरकार पहली बार बिना एजेंडा बताए संसद का विशेष सत्र बुला रही है। किसी भी विपक्षी दल से न तो सलाह ली गई और न ही जानकारी दी गई। यह लोकतंत्र चलाने का तरीका नहीं है। उन्होंने दावा किया, हर दिन मोदी सरकार मीडिया में एक संभावित एजेंडा की कहानी पेश करती है, जिससे लोगों पर बोझ डालने वाले वास्तविक मुद्दों से ध्यान भटकाने का एक बहाना तैयार किया जाता है।

भाजपा जनहित के मुद्दों को किनारे रखना चाहती है

भाजपा महंगाई, बेरोजगारी, मणिपुर, चीन, कैग रिपोर्ट, घोटाले और संस्थानों को कमजोर करना आदि जैसे प्रमुख मुद्दों को किनारे रखना चाहती है और हमारे लोगों को धोखा देना चाहती है। विपक्षी गठबंधन इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस (इंडिया) ने सरकार 18 सितंबर से बुलाए गए संसद के पांच दिवसीय विशेष सत्र में देश से जुड़े प्रमुख मुद्दों पर सकारात्मक सहयोग करना चाहती है, लेकिन सरकार को यह बताना चाहिए कि बैठक का विशेष एजेंडा क्या है। राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के आवास पर इंडिया के घटक दलों के दोनों सदनों के नेताओं की बैठक हुई जिसमें सत्र से जुड़ी रणनीति पर चर्चा की गई।

देश का हर व्यक्ति पढ़े संविधान : जयशंकर

प्रेसिडेंट ऑफ भारत विवाद पर विपक्ष को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली के प्रगति मैदान में नौ से दस सितंबर के बीच जी-20 बैठक होने जा रही है। इस बैठक के डिनर में शामिल होने के लिए राष्ट्रपति भवन से एक निमंत्रण पत्र भेजा गया है। निमंत्रण पत्र पर प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया की जगह प्रेसिडेंट ऑफ भारत लिखा गया है। इस पर लगातार विवाद बढ़ता जा रहा है।

वहीं, विपक्ष जी-20 के लिए भारत सरकार द्वारा की गई तैयारियों पर भी हमला कर रहा है। इस पर विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने कहा कि इंडिया भारत है और यह संविधान में लिखा है। मैं हर किसी को इसे (संविधान) पढ़ने के लिए कहूंगा। उन्होंने तैयारियों को लेकर कहा कि यह एक अलग युग है, यह अलग सरकार है और यह एक अलग विचार प्रक्रिया है। विदेश मंत्री जयशंकर ने कहा कि इंडिया भारत है और यह संविधान में लिखा है। मैं हर किसी को संविधान पढ़ने के लिए कहूंगा। जब आप भारत कहते हैं, तो एक अर्थ, एक समझ

और एक अनुमान आता है और मुझे लगता है कि यही हमारे संविधान में भी परिलक्षित है। उन्होंने जी-20 शिखर सम्मेलन के लिए सरकार द्वारा किए गए इंतजाम की विपक्ष द्वारा की जा रही आलोचना पर कहा कि अगर किसी को लगता है कि वे लुटियंस दिल्ली या विज्ञान भवन में अधिक सुविधाजनक महसूस कर रहे थे तो यह उनका विशेषाधिकार था। वही उनकी दुनिया थी और तब शिखर सम्मेलन की बैठकें ऐसे समय हुई, जहां देश का प्रभाव संभवत: विज्ञान भवन में या उसके दो किलोमीटर (लुटियंस दिल्ली) तक में रहा हो।

स्टालिन और प्रियांक के खिलाफ केस दर्ज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रामपुर। सनातन धर्म पर टिप्पणी करने के मामले में तमिलनाडु के युवा कल्याण एवं खेल विकास मंत्री उदयनिधि स्टालिन और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के बेटे प्रियंक खरगे के खिलाफ रामपुर के सिविल लाइंस थाने में मुकदमा दर्ज हुआ है। सिविल लाइंस क्षेत्र के एकता विहार कॉलोनी निवासी अधिवक्ता राम सिंह लोधी और आवास विकास कॉलोनी निवासी अधिवक्ता हर्ष गुप्ता ने एसपी को एक प्रार्थना पत्र दिया।

पुलिस ने बुधवार को कहा कि डीएमके नेता उदयनिधि स्टालिन और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के बेटे प्रियांक खड़गे के खिलाफ कथित तौर पर धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के आरोप में यहां प्राथमिकी दर्ज की गई है। उन्होंने कहा कि स्टालिन पर सनातन धर्म को खत्म करने का आह्वान करने और खड़गे पर उनकी टिप्पणी का समर्थन करने के लिए मामला दर्ज किया गया है। एसपी अशोक कुमार शुक्ला ने बताया कि सिविल लाइंस कोतवाली में आईपीसी की धारा 153ए, 295ए के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है।

हिंदू धर्म का जन्म कब हुआ, किसने इसकी शुरुआत की : परमेश्वर

नई दिल्ली। सनातन धर्म पर विवादित बयान देने वाले नेताओं की लिस्ट लंबी होती जा रही है। उदयनिधि स्टालिन, प्रियांक खरगे के बाद अब कर्नाटक के गृह मंत्री और कांग्रेस नेता जी परमेश्वर ने सनातन धर्म को लेकर बेतुका बयान दिया है। परमेश्वर ने हिंदू धर्म को लेकर सवाल उठाए हैं। तुमकुर में एक जनसभा को संबोधित करते हुए परमेश्वर ने कहा कि विश्व के इतिहास में कई धर्मों का जन्म हुआ है। भारत में जैन और बौद्ध धर्मों का जन्म हुआ है। इस्लाम और ईसाई धर्म बाहर से यहां आए, लेकिन हिंदू धर्म का जन्म कब हुआ और इसकी शुरुआत किसने की, यह आज भी एक सवाल है।

वामपंथियों के प्रभाव में हैं गृहमंत्री : बीजेपी

कर्नाटक के गृह मंत्री के बयान को लेकर बीजेपी ने पलटवार किया है। बीजेपी विधायक सीएन अश्वथ ने कहा कि जी परमेश्वर वामपंथियों के प्रभाव में हैं। वह हमारे देश भारत की संस्कृति और परंपरा को नष्ट करना चाहते हैं। जी परमेश्वर को एहसास होना चाहिए कि इस तरह का अहंकार उनके लिए अच्छा नहीं है। उन्हें हमारे धर्म का अपमान नहीं करना चाहिए।

नासा ने चंद्रयान-3 लैंडिंग साइट की तस्वीर भेजी

» लूनर रिकॉनिसेंस ऑर्बिटर (एलआरओ) ने खींची फोटो

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

वाशिंगटन। भारत के चंद्रयान-3 मिशन की हर तरफ चर्चा बनी हुई है। चांद की सतह पर सुरक्षित उतरने के बाद चंद्रयान-3 लगातार अपने काम में लगा हुआ है। नई-नई जानकारियां वैज्ञानिकों को मिल रही हैं। वहीं, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) इससे संबंधित तस्वीरें भी आए दिन जारी कर

रहा है। इस बीच, अमेरिका की अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने भी अब एक खास तस्वीर साझा की है। नासा ने चंद्रमा की जिस सतह पर चंद्रयान-3 उतरा रहा था, उस जगह की तस्वीर साझा है।

दक्षिणी ध्रुव से लगभग 600 किलोमीटर दूर है साइट

नासा ने सोशल मीडिया पर कहा कि चंद्रयान-3 की लैंडिंग साइट चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव से लगभग 600 किलोमीटर दूर है। लैंडिंग के चार दिन बाद एलआरओ ने लैंडर का एक तिरछा दृश्य यानी 42 डिग्री स्लीव कोण हासिल किया। साथ ही कहा कि लैंडर के आसपास दिख रही रोशनी लैंडर के धुएं के चांद की मिट्टी के संपर्क में आने से बनी है। नासा ने पांच सितंबर को यह फोटोग्राफ शेयर की है। इससे पहले, इसरो ने पांच सितंबर को विक्रम लैंडर की 3डी फोटो शेयर की थी। इसरो ने कहा था कि इस तस्वीर को देखने का असली मजा रेड और सियान रंग के 3डी ग्लास से आएगा। ये तस्वीर प्रज्ञान रोवर ने लैंडर से 15 मीटर दूर यानी करीब 40 फीट की दूरी से क्लिक की थी।

यह तस्वीर चंद्रमा पर ऐतिहासिक लैंडिंग के ठीक चार दिन बाद 27 अगस्त को चांद की कक्षा में घूम रहे नासा के लूनर रिकॉनिसेंस ऑर्बिटर (एलआरओ) ने खींची थी। बता दें, विक्रम लैंडर 23 अगस्त को शाम 6 बजकर 4 मिनट पर चंद्रमा पर उतरा था। चंद्रयान-3 चांद के दक्षिणी ध्रुव के पास सफलतापूर्वक उतरने वाला पहला अंतरिक्ष यान है।

सुप्रीम कोर्ट ने लद्दाख पर्वतीय विकास परिषद के चुनाव की अधिसूचना रद्द की

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लद्दाख पर्वतीय विकास परिषद के चुनाव की अधिसूचना को सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार (6 सितंबर) को रद्द कर दिया। लद्दाख पर्वतीय विकास परिषद के चुनाव 10 सितंबर को होने थे, सुप्रीम कोर्ट ने पिछली सुनवाई के दौरान इस याचिका पर फैसला सुरक्षित रख लिया था। लद्दाख पर्वतीय विकास परिषद के चुनाव को लेकर बीते महीने 5 अगस्त को अधिसूचना जारी हुई । लद्दाख प्रशासन ने नेशनल कॉन्फ्रेंस को हल चुनाव चिन्ह देने से मना किया था। हाई कोर्ट के बाद सुप्रीम कोर्ट ने भी इसे गलत बताया, सुप्रीम कोर्ट ने प्रशासन से 7 दिन में नई अधिसूचना जारी करने को कहा है।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।